हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

लखनऊ

मार्च, 2008 वर्ष 7 अंक 01

—: सम्पादक :—
डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी
— सहायक —
मु० गुफ़रान नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 0522-2740406
फैक्स : 0522-2741231
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/–
वार्षिक	रु० 100/–
विशेष वार्षिक	रु० 500/–
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :
''सच्चा राही''
पता : सेक्रेटरी मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा,
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ़्तर मजलिसे सहाफत व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

H.I.Computers - 9335214913

बअ़दज़ ख़ुदा बुज़ुर्ग

या साहिबल जमालि व या सय्यिदल बशर
मिन वजहि कल मुनीरि लक़द नुव्विरल क़मर
लायुमकिनिस्सनाउ कमा कॉन हक़्क़ुहू
बअ़दज़ ख़ुदा बुज़ुर्ग तुई क़िस्सा मुख़तसर

अनुवाद : हे रूप स्वामी! हे मानव नायक! चन्द्रमा तो आप के आलोकित मुख से प्रकाशित है। आपकी वास्तविक प्रशंसा असम्भव है संक्षेप यह है कि ईश्वर के पश्चात आप ही सर्वश्रेष्ठ हैं।

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक नज़र में

❐	दुन्या क्या है?	सम्पादकीय.....3
❐	कुर्आन की शिक्षा	मौलाना मंजूर नोमानी 5
❐	प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम 7
❐	काम्याबी सिर्फ मुसलसल और पायदार	सय्यिद सुलैमान नदवी 8
❐	भारत का संक्षिप्त इतिहास	स० अबूज़फर नदवी 9
❐	शुक्रे खुदाए पाक	इदारा 12
❐	हम कैसे पढ़ाएं	डा० सलामत अली 14
❐	नअ़त	ताबिश महदी 16
❐	स्वतंत्रता सेनानी मौलवी अहमदुल्लाह शाह	हबीबुल्लाह आजमी..... 17
❐	आपके प्रश्नों के उत्तर	इदारा 20
❐	ऐसा देश है मेरा	एन साकिब अब्बासी 20
❐	आधुनिक युग में मौलाना रूम की सार्थकता	अली जहीर नकवी 21
❐	औलाद की तर्बियत (पद्य)	इदारा 22
❐	समय मूल्यावन है	हमीदुल्लाह..... 23
❐	मुसलमानों के साथ भेद भाव का	एम.हसन अंसारी 24
❐	बर्स (लोको डर्मा)	ग्रहीत 25
❐	ग्लोबल वार्मिंग	डॉ० उबैदुर्रहमान 27
❐	सैलानी की डायरी	एम. हसन अंसारी 29
❐	इस्लाम की नैतिक शिक्षाएं	अल्लामा स०सु०नदवी 30
❐	हिन्दी लिपि में उर्दू शब्दों का उच्चारण	.....
❐	जिक्रे मीलादुन्नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)	इदारा 33
❐	ख्वाजा हसन निजामी का अदबी खत	अनुवाद 36
❐	हजरत उस्मान (रजि०) के अखलाक	इरफान फारूकी नदवी 37
❐	अन्तर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ० मुईद अशरफ 40

❐❐❐

(सम्पादक का लेखकों से सहमत होना आवश्यक नहीं है। सच्चाराही से सम्बन्धित सभी विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा।)

दुन्या क्या है?

डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

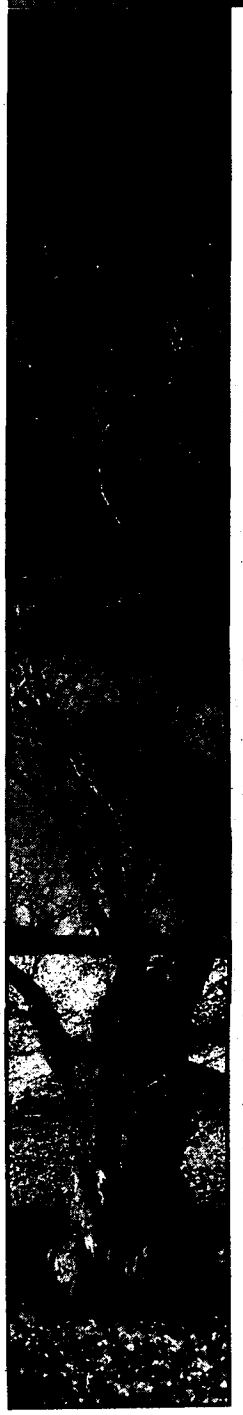

इस ज़मीन की ज़िन्दगी, इस पर रहने बसने वालों की ज़िन्दगी, और इस ज़मीन पर पाई जाने वाली चीज़ों का नाम, दुन्या है, यह कब से है? यह अल्लाह ही जानता है मगर यह किसी समय नहीं थी, अल्लाह ने इसे पैदा किया और एक समय ऐसा आएगा जब यह न होगी।

मादी लिहाज़ से (भौतिकानुसार) यह ज़मीन क्या है, यह सूरज का एक भाग है यह पहले आग का पिघला गोला थी कैसे ठोस हुई इस पर पहाड़ कैसे जमे, इस पर समन्दर कैसे बने, पहाड़ों में और ख़ुद ज़मीन के भीतर क़िस्म क़िस्म की मअ़दनियात (खनिज पदार्थ) कैसे बनीं, ज़मीन के ऊपर नबातात (वनस्पति) कैसे उगीं, ज़मीन के भीतर पिघला आतशीं माददा (ज्वाला तत्व) आज भी मौजूद है, यह जुग़राफियायी या साइन्सी बहसें इस लेख में छेड़ना मक़सद नहीं है यह बहसें और यह मअ़लूमात (ज्ञान) भी हमारी ज़िन्दगी के लिये ज़रूरी हैं और हम इन बहसों में पूरी तरह हिस्सा लेते और उनसे फ़ायदा उठाते हैं और यतफ़क्करून फ़ी ख़ल्क़िस्मवाति वल् अर्ज़" में इस को भी शामिल करते हैं लेकिन इस लेख में इस दुन्या का ज़िक्र फ़िक्रे आख़िरत के विषय में लाना चाहते हैं।

दुन्या सौ पचास साल की क़लील ज़िन्दगी (क्षीण जीवन) से मुतअ़ल्लिक़ है तो आख़िरत, बर्ज़ख़ से लेकर जन्नत या दोज़ख की हमेशा हमेश (सदैव) वाली ज़िन्दगी से मुतअ़ल्लिक़ है लेकिन उख़रवी ज़िन्दगी (पारिलौकिक जीवन) के भले या बुरे होने का इन्हिसार (निर्भरता) दुन्यावी ज़िन्दगी पर है।

इन्सान का ख़मीर इस दुन्या की मिट्टी से है लेकिन इस की तख़लीक़ (रचना) आसमान पर हुई। जिन्नात की पैदाइश पहले हो चुकी थी, अबुल बशर (मानव पुर्खा) आदम अलैहिस्सलाम को जब अल्लाह तआ़ला ने मिट्टी से बना कर उनमें जान डाली तो दादा आदम के सम्मान में अल्लाह तआ़ला ने फ़िरिश्तों को हुक्म दिया कि आदम को सज्दा करो, फ़िरिश्तों के बीच अ़ज़ाज़ील जिन्न भी था, जिसे इब्लीस भी कहा जाता है, उस ने सज्दा करने से इन्कार कर दिया, अल्लाह तआ़ला ने सबब पूछा, उस ने कहा मैं आग से हूं यह मिट्टी से, मैं इनसे अफ़ज़ल (श्रेष्ठ) हूं, इस लिए सज्दा न किया, मर्दूद की अ़क्ल मारी गयी यह न सोचा किस की हुक्म उ़दूली (आदेशोल्लंघन) कर रहा हूं, आसमान से उतरने का हुक्म हो गया, मर्दूद (पतित) ने रब से प्रार्थना की कि जिस के सबब मैं मर्दूद हुआ मैं उस से बदला लूंगा मुझे क़ियामत तक की छूट दी जाए, अल्लाह की मस्लहत, मर्दूद को छूट मिल गयी, दादा आदम के जिस्म से अल्लाह ने अपनी क़ुदरत (शक्ति) से दादी हव्वा को निकाल कर दादा की स्त्री बना दिया, दोनों आराम से जन्नत की वाटिकाओं में रहते थे, जन्नत में एक दरख़्त (वृक्ष) था, अल्लाह तआ़ला ने दादा दादी को उस के पास जाने और उससे कुछ खाने को रोक दिया था। इब्लीस ने दादा दादी को किसी तरह बहकाया और चक्मा देकर उस पेड़ से खाने को तैयार कर लिया।

यह भी अल्लाह की मसलहत थी, जैसे ही दादा दादी ने उस दरख़्त से कुछ चखा दोनों

बरहना (वस्त्रहीन) हो गये अल्लाह तआ़ला ने पूछा ऐसा क्यों किया तो दोनों ने अपनी भूल का इक़रार किया और मुआ़फ़ी मांगने लगे, लेकिन अल्लाह तआ़ला का हुक्म हुआ ज़मीन पर जाओ, इब्लीस जिस ने अभी तक हुक्म की तअ़मील (आज्ञा पालन) में ढील ढाले हुए था उसे भी नीचे उतार दिया गया।

काफ़ी दिनों तक दादा दादी अलग–अलग रोते रहे और रब से मुआ़फ़ी मांगते रहे, यहां तक कि भूल की मुआ़फ़ी मिली, दोनों की मुलाक़ात हुई, औलाद का सिसिला चला इब्लीस ने अपनी ज़ुर्रीयत के साथ आदम (अ०) की औलाद को बहकाना शुरूअ़ किया, अल्लाह तआ़ला ने दादा, दादी को इस धरती पर उतारा ही इस मस्लहत से था कि आदम की औलाद का इम्तिहान ले।

एक तरफ़ इब्लीस (शैतान) की कोशशें शुरूअ़ हुईं तो दूसरी जानिब अल्लाह ने अपने बन्दों की हिदायत (मार्ग दर्शन) के लिए अपने नबियों और रसूलों का सिलसिला चलाया जो अल्लाह तआ़ला से बराह रास्त (सीधे) आदेश लेकर ख़ुद उस पर चलते थे और अपने रब के हुक्म के मुताबिक़ (आदेशानुसार) दूसरों को भी चलाते रहे। नबियों और रसूलों का यह सिलसिला हर ज़माने (काल) और क्षेत्र में चलता रहा। (अल्लाह का सलाम हो उन पर) जब यह संसार इस लाइक़ हो गया कि सारे संसार में एक ही शरीअ़त (विधान) चलाई जा सके तो अल्लाह ने अपने अन्तिम नबी को अंतिम शरीअ़त के साथ भेज दिया (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) अल्लाह तआ़ला ने आप पर अपनी आख़िरी किताब क़ुर्आन मजीद उतारी। आप की शरीअ़त सारे संसार के लिये है और इस संसार के अंत कियामत तक के लिए है। अब किसी और शरीअ़त पर चल कर कोई हमेशा वाली ज़िन्दगी में नजात नहीं पा सकता।

मरने के पश्चात इन्सान की रूह (आत्मा) क़ियामत तक जिस आ़लम (जगत) में रखी जाती है उस को बरज़ख़ कहते हैं, उसको क़ब्र की ज़िन्दगी भी कहते हैं।

क़ब्र की ज़िन्दगी में भी मानव को दुख या सुख मिलता है। अच्छे कर्म करने वाले अर्थात अपने ज़माने के नबी की पैरवी (अनुकरण) करने वाले अक्सर आराम से सोते हैं। उनको कोई दुख नहीं होता न भूख प्यास न कोई और तकलीफ़, शहीद लोगों को तो बरज़ख़ में भी एक ख़ास क़िस्म (विशेष प्रकार) का जीवन मिलता है। उन की रूहें हरी हरी चिड़ियों के जिस्म में होती हैं। वह जन्नत में सैर सपाटे कर के महज़ूज़ (आनन्दित) होती हैं। रब उनको खिलाता भी है अर्थात वह लज़ीज़ शराब व तआ़म (खान पान) से भी लुत्फ़ अन्दोज़ (आनन्दित) होते हैं। अंबिया व रुसुल (अ़लैहिमुस्सलाम) की बरज़ख़ी ज़िन्दगी तो हुज़्न व ख़ौफ़ (दुख भय) से दूर बहुत ही अअ़्ला (उत्तम) है।

जब क़ियामत आएगी पहला सूर (नरसिंहा) फूंका जाएगा तो सब कुछ ख़त्म हो जाएगा सिवाए अल्लाह के फिर जब दोबारा सूर फूंका जाएगा फिर सब अगले पिछले उठ बैठेंगे। हिसाब व किताब होगा हर एक के लिए उस के अ़मलों के मुताबिक जन्नत या जहन्नम का फ़ैसला होगा। जन्नत के इनआ़मात और वहां के लुत्फ़ का तसव्वुर (कल्पना) भी ना मुम्किन (असम्भव) है। जन्नत के सुख से कभी कोई निकाला न जाएगा। इसी तरह जहन्नम की तकलीफ़ों और उसके अ़ज़ाब को सोचा भी नहीं जा सकता बहुत ही सख़्त अ़ज़ाब होगा, मगर जहन्नम में दो तरह के लोग डाले जाएंगे एक वह जो हमेशा जहन्नम में रहेंगे, दूसरे कुछ ईमान वाले अपने गुनाहों के सबब जहन्नम में डाले जाऐंगे वह अपने गुनाहों की सज़ा भुगत कर या अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की शफ़ाअ़त या किसी और नबी या किसी अल्लाह के नेक बन्दे या नाबालिग़ मरी

(शेष पृष्ठ १३ पर)

कुर्आन की शिक्षा

मौ० मु० मंजूर नोमानी

तकवा

अल्लाह पर आखिरत के दिन पर और नबुव्वत के सिलसिले पर ईमान के बाद जिन चीजों की दावत कुरआने मजीद ने जियादा महत्व के साथ दी है और जिन को गोया इन्सान की फलाह (कामयाबी) व सआदत (खुश बख्शी) का मदार (आधार) बतलाया है, उन में से एक "तक़वा" भी है।

तकवा की अस्ल हकीकत यह है कि बन्दा अल्लाह और आखिरत के दिन पर यकीन रखते हुए फिर अल्लाह की नाराजी और उस की पकड़ और आखिरत के अजाब और जवाब दही से डरते हुए फिक्र और एहतियात (चिन्ता और सावधानी) के साथ जिन्दगी गुजारे।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मशहूर सहाबी हजरत उबैय्य बिन कअब (रजि०) जो कुर्आन के इल्म में खास इम्तियाज और महारत रखते थे। (और खुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी उन की इस खास इल्मी हैसियत की तौसीक फर्मायी थी) एक दिन उनसे अमीरूल मोमिनीन हजरत उमर रजीयल्लाहु अन्हु ने पूछा कि "तकवा" की हकीकत क्या है? हजरत उबैय्य (रजि०) ने फरमाया कि "कभी कांटों भरे किसी रास्ते पर चलने का अवसर तो आपको जरूर मिला होगा।" हजरत उमर (रजि०) ने जवाब दिया – क्यों नहीं, कई बार ऐसे रास्तों पर चलने का इत्तिफाक हुआ है। हजरत उबैय (रजि०) ने पूछा कि " उस वक्त आप ने क्या किया" हजरत उमर (रजि०) ने फर्माया "मैंने अपने जिस्म और कपड़ों को संभाला और खूब कोशिश की कि अपने जिस्म और कपड़ों को कांटों से बचाकर सही सलामत निकल जाऊँ। हजरत उबैय (रजि०) ने फर्माया : फजालिक तकवा। (बस यही तकवा की हकीकत है)

हकीकत यह है कि तकवा की कोई तशरीह इस से बेहतर और उचित रूप से नहीं की जा सकती।

कुरआने – मजीद की जिन आयतों में तकवा इख्तियार करने की तलकीन और ताकीद फर्मायी गयी है उन सब का तो शुमार भी मुश्किल है। सिर्फ चन्द आयतें इस सिलसिले की यहां पढ़ लीजिए :–

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! अल्लाह से डरो जैसा कि उस से डरने का हक है, और (आखिरी दम तक इस तकवा पर काइम रहते हुए दिल–व–जान से अपने उस मालिक की फर्माबरदारी करते रहो, यहां तक कि) तुम को इसी फ़र्माबरदारी की हालत में मौत आये। (आलि इम्रान : १०२)

मतलब यह है कि अल्लाह तआला जो सब का पैदा करने वाला है और परवरिश करने वाला है, और जिसके हाथ में जिन्दगी और मौत का निजाम है और बहुत ही बखशिश व रहमत के साथ जिस के कहर व जलाल की भी कोई हद नहीं है, ऐसे मालिक के बन्दे को जैसा डरना चाहिए, ईमान वाले उस से वैसा ही डरें, और जिन्दगी की आखिरी सांस तक उस की फरमाबरदारी करते रहें। और सूरए तगाबुन में इसी बात को इन शब्दों में अदा किया गया है :–

तर्जमा : अल्लाह से डरो और तकवा इख्तियार करो जितना भी तुम से हो सके, और दिलो–जान से उस के सारे हुक्म सुनो और मानो। (तगाबुन : १६)

और सूरए हश्र में फर्माया गया है –

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! अल्लाह से डरो और हर आदमी को जरूर देखना (और सोचना) चाहिए कि उस ने कल के लिये (यानी आखिरत के लिये) क्या सामान किया है। और (तुम को दोबारा ताकीद की जाती है कि) अल्लाह से डरते रहो। यह बिलकुल यकीनी बात है कि अल्लाह तुम्हारे सब अगले पिछले अमलों से पूरी तरह बा खबर है। (तुम्हारा कोई भी अमल उससे छुपा हुआ नहीं है।) (हश्र : १८)

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! अल्लाह से डरो और उसके कुर्ब (नजदीकी) का जरीआ तलाश करो और उसकी राह में जिद्दो जहद (पराक्रम–कोशिश) करते रहो ताकि तुम को फलाह नसीब हो। (माइदा : ३५)

इन चारों आयतों में तकवा की

ताकीद ही पर बस नहीं किया गया है, बल्कि इस के साथ इसकी जरूरियात (अनिवार्यतायें) और तकाजों को इख्तियार करने पर पूरा जोर दिया गया है। चुनांचे पहली आयत में।

इत्तकुल्लाह हक्क तुकातिही (अल्लाह से डरो जैसा कि डरने का हक है)

के जरिये तकवा के हुक्म के बाद फर्माया गया है कि –

"जिन्दगी की आखिरी सांस तक अपने पर्वर्दिगार की पूरी पूरी फर्माबरदारी करते रहो।"

और दूसरी आयत में इसी मजमून (विषय) को वस्मऊ व अतीऊ (सुनो और मानो) के शब्दों में अदा किया गया है। और तीसरी आयत में वल तनजुर नफसुम्मा कद्दमत लिगदिन।

(और हर आदमी देख भाल ले कि कल के लिय उसने क्या भेजा है।) के शब्दों में हर शख्स को अपने अमलों का हिसाब लेते रहने और आखिरत के सफर के लिये आमाले–सालेहा का तोशा तैयार करने की ताकीद फर्मायी गयी है और चौथी आयत में

वब्तगू इलैहिल् वसीलत व जाहिदू फी सबीलिही

का मतलब भी यही है कि जिन आमाले सालेहा और जिस फर्माबरदारी और जिन मुजाहिदों (कोशिशों) के जरिये अल्लाह तआला का कुर्ब (संपर्क) और उसकी रिजा (प्रसन्नता) हासिल हो सकीत है, उन को इख्तियार दिया जाये और इस राह में पूरी–पूरी जिद्दो जहद (कोशिश) की जाये।

और आखिर में

लअ़ल्लकुम तुफ्लिहून

(ताकि तुम फलाह पाओ)

फर्मा कर मुत्तकी लोगों को कामयाबी की खुशखबरी भी सुनाई गई है, जो दुन्या व आखिरत दोनों की कामयाबियों को शमिल है।

फिर कुरआने–मजीद की सैकड़ों आयतों में उस फलाह व कामयाबी की तफसील बयान की गई है जो तकवा का रास्ता इख्तियार करने की वजह से, अल्लाह के मुत्तकी बन्दों को दुन्या और आखिरत मे हासिल होने वाली है।

चंद आयतें इस सिलसिले की भी यहां पढ़ लीजिए। पहले सिर्फ दो तीन वे आयतें पढ़िये जिन में मुत्तकियों को जन्नत की खुशखबरी सुनायी गयी है। सूरए आलि अिम्रान में इर्शाद है –

तर्जमा : जो लोग तकवा का रास्ता इख्तियार करें उन के लिए उनके रब के पास बिहिश्ती बाग हैं, जिन के नीचे नहरें बहती हैं। वे हमेशा इन ही बागों में रहेंगे। और पाक–साफ बीवियां यहां उन की साथी होंगी। और अल्लाह की रिजा से वे नवाजे जायेंगे। अल्लाह अपने सब बन्दों (के जाहिरी व बातनी खुली–छुपी हालतों) पर गहरी नजर रखता है। (इस लिये किसी का मुत्तकी होना या न होना उस से छुपा नहीं रह सकता।) (आलि इम्रान : १५)

इस आयत में मुत्तकियों को जन्नत और उसकी नेमतों के अलावा अल्लाह की रिजा की भी खुशखबरी सुनायी गयी है जो यकीनन दुन्या व आखिरत की सारी नेमतों से बढ़ कर है। खुद कुरआने मजीद में भी फरमाया गया है –

अल्लाह की रिजा बड़ी चीज है। (तौबः)

और सूरए नह्ल में इर्शाद फर्माया गया है।

तर्जमा : और मुक्तकियों का ठिकान क्या ही अच्छा ठिकाना है, गैर फानी और सदा बहार बिहिश्त के बाग जिन में वे दाखिल होंगे, उनके नीचे नहरें बह रही हैं। वहां उनके लिए वह सब कुछ मिलेगा जो वे चाहेंगे इसी तरह अल्लाह मुत्तकियों को (उन के तकवा का) बदला देगा। (नह्ल : ३०, ३१)

और सूर : कमर में इर्शाद फरमाया गया है :

तर्जमा : जिन बन्दों ने दुन्या में तकवा का रवैया इख्तियार किया वे (आखिरत में) बागों और नहरों में रहेंगे, एक अुम्दा (उत्तम) मकाम में पूरा इख्तियार रखने वाले, काईनात के हकीकी बादशाह के कुर्ब में। (कमर : ५४, ५५)

अल्लाह तल्लाह! क्या नसीब है उन बन्दों के जिन को जन्नत में हर तरह की दूसरी नेमतों के साथ अपने मालिक का खुसूसी कुर्ब भी हासिल होगा।

क़ुर्आने मजीद का तर्जमा

अ़वामुन्नास को क़ुर्आने मजीद का वही तर्जमा पढ़ना चाहिए जिस के साथ ज़रूरी नोट्स भी हों। इसी तरह हदीस का वही तर्जमा पढ़ना चाहिए जिस के साथ ज़रूरी नोट्स हों।

प्यारे नबी की प्यारी बातें

अमतुल्लाह तस्नीम

अल्लाह की महबूबियत की अलामात और नताएज

हजरत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अल्लाह तआला का इरशाद है, जो मेरे दोस्त से दुश्मनी रक्खेगा मैंने उससे लड़ाई का एलान कर दिया और मेरे बन्दों का मेरे फराएज से नजदीकी हासिल करना जिस कद्र मुझको महबूब है उस कदर किसी नेकी से नजदीकी मुझको महबूब नहीं और मेरा बन्दा मुझसे नवाफिल के साथ बराबर करीब होता है यहां तक कि मैं उससे मुहब्बत करने लगता हूं। और जब मैं उससे मुहब्बत करता हूं तो उसके कान बन जाता हूं जिससे वह सुनता है और उसकी आंख बन जाता हूं जिससे वह देखता है; और उसके हाथ बन जाता हूं जिनसे वह पकड़ता है; और उसके पांव बन जाता हूं जिनसे वह चलता है। अगर वह मुझसे सवाल करता है तो मैं उसको देता हूं। अगर वह मुझसे मदद चाहता है तो मैं उसकी मदद करता हूं। अगर वह मुझसे पनाह चाहता है तो पनाह देता हूं।

(बुखारी)

अल्लाह की महबूबियत से दुन्या में महबूबियत

हजरत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि नबी (स०) ने फरमाया, जब अल्लाह अपने किसी बन्दे से मुहब्बत करता है तो हजरत जिबरील पुकारते हैं कि अल्लाह तआला फुलां से मुहब्बत करता है, तुम भी उससे मुहब्बत करो। तो आसमानवाले उससे मुहब्बत करने लगते हैं। फिर जमीन पर उसकी मकबूलियत रख दी जाती है। (बुखारी मुस्लिम)

मुस्लिम की एक रिवायत में है – रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलहि वसल्लम ने फरमाया, जब अल्लाह किसी बन्दे से मुहब्बत करता है तो हजरत जिबरील से फरमाता है मुझे फुलां आदमी से मुहब्बत है। तुम भी उससे मुहब्बत करो तो हजरत जिबरील उससे मुहब्बत करते हैं। फिर हजरत जिबरील आसमानवालों में मुनादी करते हैं कि अल्लाह तआला फुलां आदमी से मुहब्बत करता है तुम भी उससे मुहब्बत करो; तो आसमान वाले उससे मुहब्बत करते हैं। फिर उसकी मुहब्बत जमीनवालों के दिलों में रख दी जाती है और जब अल्लाह तआला किसी बन्दे से नफरत करता है तो हजरत जिबरील को पुकारता है और कहता है कि फुलां आदमी से मैं नफरत करता हूं तुम भी उस से नफरत करो। पस हजरत जिबरील उससे नफरत करने लगते हैं और आसमानवालों में मुनादी करते हैं कि खुदा तआला फुलां आदमी से नफरत करता है, तुम भी उससे नफरत करो। पस वह उससे नफरत करने लगते हैं। फिर उसकी नफरत जमीनवालों के दिलों में डाल दी जाती है।

हजरत आयशः (र०) से रिवायत है कि एक साहब को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किसी सरयः पर भेजा। जब वह लोगों को नमाज पढ़ाते थे तो हर नमाज को कुलहुवल्लाहु अहद पर खत्म करते थे। जब लोग सरयः से पलटे तो इसका जिक्र रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से किया। आपने फरमाया, इनसे पूछो कि किस लिए ऐसा करते थे। जब उनसे पूछा गया तो उन्होंने कहा इसमें रहमान की सिफत है। मैं चाहता हूं कि इसको पढ़ा ही करूं। आपने फरमाया कि उनको खबर दो कि अल्लाह उनसे मुहब्बत करता है। (बुखारी–मुस्लिम)

एअ्लान्

इस अंक से उर्दू शब्दों के शुद्ध उच्चारण की श्रृंखला का आरंभ किया जा रहा है आप उसे पढ़ कर लिखें कि श्रृंखला लाभदायक है या नहीं, साथ ही आप किसी उर्दू शब्द का शुद्ध उच्चारण जानना चाहते हैं तो एक कार्ड पर लिख भेजें, उस शब्द का शुद्ध उच्चरण छाप दिया जायेगा। हमें खेद है कि ऊपर के लेख में मुहब्बत कई बार आया है जबकि शुद्ध महब्बत है।

कामयाबी सिर्फ मुसलसल और पायदार कोशिश में है

सैयद सुलैमान नदवी (रह०)

योरोप के इतिहास के पंडित कहते हैं कि मुसलमानों के उत्थान व पतन दोनों का एक ही कारण है अर्थात गैर कौमों के साथ नसबी (वंशजीय) और सामूहिक मेल जोल, हम भी कहते हैं कि मुसलमानों के उत्थान और पतन दोनों का एक ही कारण है और वह उनका फौरी और वक्ती (क्षणिक) जोश, वह बाढ़ की तरह पहाड़ को अपनी जगह से हिला सकते हैं, लेकिन वह कोहकन (पहाड़ काटने वाला) की तरह से पत्थर जुदा करके रास्ता साफ नही कर सकते। वह बिजली की तरह एक आन में खिरमन (ठिकाना) को जला कर स्याह कर सकते हैं लेकिन च्यूंटी की तरह एक एक दाना नहीं ढो सकते। वह एक मस्जिद की सुरक्षा व बचाव में अपना खून पानी की तरह बहा सकते हैं लेकिन एक ढा दी गयी मस्जिद को दोबारा बनाने के लिये मुसलमान कोशिश जारी रख नहीं सकते। यह इन से मुमकिन था कि मुहम्मद अली और अबुल कलाम के दायें बायें गिरकर जान दे देते लेकिन यह बस की बात नही कि वह निरन्तर कानूनी संघर्ष से इन असीराने इस्लाम (इस्लाम के बन्दियों) को छुड़ा लायें।

हिन्दुस्तान की सियासी बिसात पर इस वक्त जो बाजी खेली जा रही है, हम को यकीन नहीं कि मुसलमान इसके अच्छे शातिर (शतरंज का अच्छा चालाक खिलाड़ी) साबित हो सकें, क्योंकि यह वह मैदान है जो एक एक कदम गिन कर आहिस्तः आहिस्तः आगे बढ़ाने से जीता जा सकता है, और एक दौड़ में आगे बढ़ जाने की कोशिश में अब मात सामने रखी है और अगर गफलत से अपनी जगह पर कायम रहें तो यह तो शह की ताब न लाकर फौरन बिसात उलट देंगे।

हमारी नाकामी का असल सबब (कारण) क्या है? यह है कि हम आंधी की तरह आते हैं, और बिजली की तरह गुजर जाते हैं। हम को दरिया के उस पानी की तरह होना चाहिए जो धीरे–धीरे बढ़ता है और सालहासाल में किनारों को काट कर अपना दहाना बढ़ाता जाता है। कामयाबी मुसलसल (निरन्तर) और पायदार कोशिश में है। हिमालय की हिमाच्छादित चोटियां धीरे–धीरे पिघलती हैं लेकिन कभी गंगा और यमुना को सूखने नहीं देतीं। आसमान का पानी घंटा में जंगल और पहाड़ को जल थल बना देता है लेकिन कुछ ही दिनों में हर तरफ धूल उड़ने लगती है।

तुम्हारी इबरत (सीख) के लिए खुद तुम्हारी कौमियत की पैदाइश का सबक काफी है। इस्लाम इक्कीस साल में तकमील (पूर्णता) को पहुंचा। मक्का में आंहजरत सल्ल० तेरह साल रहे। और इस लम्बी मुद्दत का हर पल दावत व तबलीग में गुजरा, फिर भी खातिरख्वाह कामयाबी न हो सकी, लेकिन आप इससे निराश न हुए और जब आप के चचा ने बुला कर समझाया कि इस ख्याले खाम से बाज आजाओ, उस वक्त आप की जबान से जो फिकरः निकला उस की रौशनी उस वक्त तक मांद न होगी जब तक आसमान पर सूरज और चांद की रौशनी बाकी है। आप ने फरमाया "कुरैश अगर मेरे दाहिने हाथ में सूरज और बायें' हाथ में चांद रख दें तो इस कोशिश से बाज न आऊंगा।"

जिस कौम ने इस संकल्प की गोद में दीक्षा पायी हो, उसके लिये हैफ है कि एक एक मिनट में उस का रंग बदल जाये, वह चांद और सूरज को पाकर नहीं, बल्कि चांद की तरह की एक जर्द धातु से ललचा कर और सूरज की तरह एक सफेद धातु से डर कर अचानक और दफअतन उसके इरादे का रूख इस तरह पलट जाये गोया वह पवन के झोंके में पतझड़ की मार झेलें।

हम एक ही बात कहना चाहते हैं कि कामयाबी सिर्फ मुसलसल और पायदार कोशिश में है।

(पन्द्रह रोज : तामीरे हयात लखनऊ २५ दिसम्बर २००७ से साभार)

प्रस्तुति : एम० हसन अंसारी

दसवीं किस्त

भारत का संक्षिप्त इतिहास

मुस्लिम काल

सय्यिद अबू ज़फर नदवी

हुसैन लंकाह बिन कुत्बुद्दीनः कुत्बुद्दीन के मरने के बाद उसका बड़ा लड़का हुसैन शाह तख्त पर बैठा। यह बड़ा मेहनती निकला। वह विद्वान और कुशल था और विद्वानों का बड़ा आदर करता था। उसने अपनी सल्तनत के प्रारम्भ में पहले शूर के किले पर फिर चनीवट पर कब्जा किया और दूसरी तरफ धनकोट के किले तक अपने कब्जे में ले आया।

शैख यूसुफबहुदा सुल्तान बहलोल लोदी से अपने न्यायदान (दाद रसी) का स्मरण कराया करते थे। अब जो हुसैन लंकाह धनकोट तक पहुंच गया तो राज्यनीतिक दृष्टिकोण से सुल्तान को भी यह खतरनाक मालूम हुआ। चुनानचि उसने अपने लड़के बारबक शाह को तातार खांन लोदी के साथ मुल्तान फतह करने के लिए रवाना किया।

संयोग देखिये कि उसी जमाने में शाह हुसैन के सगे भाई ने जो कोट करूर का हाकिम था, बगावत की। शाह हुसैन ने इस खानाजंगी (गृहयुद्ध) को अधिक खतरनाक समझकर पहले उस ओर ध्यान दिया। चुनानचि वहां पहुंच कर उस को बन्दी बना लिया। इसी बीच मालूम हुआ कि बारबक दिल्ली से फौज लेकर मुल्तान पहुंच गया है। और ईदगाह के पास शहर से बाहर किला फतेह करने में लगा हुआ है। शाह हुसैन नदी पार करके तुरंत मुल्तान में दाखिल हो गया और सारे लशकर को अपने सामने तलब करके नर्मी और गम्भीरता से कहा युद्ध स्थल में केवल वही जाएं जो अपनी जानें लड़ाने के लिए हर तरह तैयार हों शेष खुशी के साथ किले की सुरक्षा में लगे रहें।

दूसरे दिन सुबह दस बारह हजार चुने हुए सवार और प्यादा लेकर हुसैनलंकाह नगर से बाहर निकला। हुसैन लंकाह ने सेना को आदेश दिया कि सारी सेना एक बार उन पर तीर बरसाए। पहले ही बार जो बारह हजार तीर दुश्मन पर बरसे तो घबराहट पैदा हो गई और दूसरी बार तीर बरसाने पर दुश्मन की सेना बिखरगई और तीसरी बार जब तीरों की बारिश हुई तो फौज में भगदड़ मच गई और चीनवट पहुंच कर वहा के किलादार को, जो हुसैन लंकाह की तरफ से था, गद्दारी से मार कर किला ले लिया। हसुैन लंकाह ने मुल्तान की इस विजय को गनीमत (शत्रुघन) समझ कर किला चीनवट की तनिक भी चिन्ता नहीं की।

इन्हीं दिनों रूहैला कौम का सरदार सुहराब परगजम बादशाह की सेवा में मुल्तान पहुंचा। उसकी कौम रूहैला उस के साथ थी। शाह ने उसका आना मुबारक समझा और कोर्ट करूर से किला धनकोट तक का क्षेत्र उन की जागीर में दे दिया। इस खबर को सुन कर अनगिनत बिलोच अपना देश त्याग कर शाह हुसैन लंकाह की सेवा में हाजिर हुए। उसने देश का शेष क्षेत्र जो सिन्ध नदी के किनारे स्थित था उन को सौंप दिया। धीरे–धीरे सेन्तपुर से धनकोट तक सारा देश बिलोचियों के कब्जे में आ गया लेकिन इस की बदौलत हुसैन लंकाह के पास एक अच्छी सेना तैयार हो गयी जिस की उसको सख्त जरूरत थी।

समह कौम में बायजीद और इब्राहीम सरदार बड़े पाये के थे। सिन्ध के बादशाह निजामुद्दीन नन्दा की बेरुखी देख कर यह दोनों सिन्ध से हुसैन लंकाह के पास चले आए। शाह लंकाह इन दोनों के आने से बहुत खुश हुआ। बायजीद को किला शूर और इब्राहीम को उच्छ शहर दे दिया।

जाम बायजीद खुद विद्वान थे और इसी लिए उसका दरबार विद्वानों और विशेषज्ञों का केन्द्र रहता। शैख जमालुद्दीन कुरैशी जो शैख आलम कुरैशी की औलाद में से थे और खुरासान में रह कर विभिन्न शास्त्र और ज्ञान में कमाल हासिल कर लिया था उसको इसी फज्लो कमाल के कारण मंत्री पद प्रदान किया गया। बायजीद मजहब का बड़ा पाबन्द था।

शहर शूर में एक बार एक मकान तैयार करा रहा था कि जमीन से खजाना निकल आया। उसने लेने से बिल्कुल इन्कार कर दिया और तमाम दौलत शरअी वारिस "शाह हुसैन लंकाह

की सेवा में भेज दी जिससे वह बहुत प्रसन्न हुआ उसकी ईमानदारी तथा निःस्वार्थता (एखलास) का बड़ा प्रशंसक हो गया।

दिल्ली में बहलोल लोदी के बाद जब सिकन्दर लोदी बादशाह हुआ तो हुसैन लंकाह ने उसके पिता को मृत्व पर शोक पत्र भेजा और दोनों तरफ से उपहार का आदान प्रदान हुआ और इस प्रकार सुलह की बुनियाद पड़ी।

शाह हुसैन लंकाह, सुल्तान महमूद बेगढ़ा गुजराती से भी पत्र व्यवहार रखता था। एक बार काजी मुहम्मद, जो ज्ञान विज्ञान में कमाल रखते थे, दूत बनाकर गुजरात भेजा और यह निर्देश दिया कि वापसी के समय वहां के शाही महलों को एक नजर देख ले ताकि उसी नमूने के महल यहां भी बनवा दिये जायं।

दूत जब मुल्तान वापस आया तो शाही महलों के बारे में बताया कि मेरी अशिष्टता (गुस्ताखी) को क्षमा कियाजाय अगर मैं यह कहूं कि मुल्तान के एक वर्ष के तमाम आय (आमदनी) भी उनके महलों के निर्माण पर खर्च की जाय तो भी सन्देह है कि उस खूबी के महल तैयार हो सकें।

यह सुनकर बादशाह बड़ा दुखी रहने लगा। वजीर एबादुल मुल्क इसको महसूस करके एक दिन उसने निवेदन कियाकि हुजूर के उदासीनता का क्या कारण है? हुसैन लंकाह ने कहा मुझे अफसोस है कि गुजरात जैसे महल बनवा नहीं सकता। वजीर ने कहा खुदावन्द तआ़ला ने तमाम दुन्या की खूबियां एक ही देश को प्रदान नही की हैं। गुजरात मालवा, दकिन के देश यदि अधिक उपजाऊ और हरे भरे हैं तो मुल्तान की पुरुषोत्पादकता (मर्दुमखेजी) कुछ कम गर्व की चीज नहीं। यहां के विद्वान और कुशल लोग भी सारे हिन्दुस्तान में मशहूर हैं। यहां ऐसे बुद्धजीवी हैं जिनकी दामादी पर सुल्तान बहलोल लोदी गर्व करता है। शैखुल इस्लाम बहाउद्दीन ज़करया के खानदान में अब भी गर्व के योग्य लोग हैं। मौलाना फतहुल्लाह और उनके शागिर्द मौलाना अजीजुल्लाह जैसे नामवर आलिम अब भी इसी प्रान्त के रहने वाले हैं। एमादुलमुल्क का यह भाषण सुनकर शाह हुसैन लंकाह प्रसन्न हो गया।

अब शाह हुसैन बूढ़ा हो गया था। इस लिए शान्ति से एक कोने में बैठ कर अपने बड़े लड़के फिरोज खां को फिरोजशाह का खिताब देकर तख्त पर बैठा दिया। फिरोजशाह नालाएक निकला, कंजूस और स्वभाव का बड़ा तेज था। इमादुलमुल्क के एक लड़के को मारडाला। वजीर ने बादशाह को जहर दे दिया। इस घटना से हुसैन लंकाह को जो अभी जीवित था, बहुत दुख हुआ। उसने अपने एक फौजी अफसर बायज़ीद को इशारा किया जिसने वजीर इमादुल मुल्क को, जब वह उसकी सेना का मुआएना (निरीक्षण) कर रहा था, बन्दी बना कर कैद कर दिया।

अब हुसैन शाह लंकाह ने अपने पोते महमूद शाह को उत्तराधिकारी (वलीअ़हद) बनाया और बायजीद को वजीर और उसका गुरू भी मुकर्रर किया। कुछ दिनों बाद २६ सफर ६०३ हि० (१४६८ ई०) में हुसैन शाह का निधन हो गया।

महमूद शाह कमसिन था। उसके चारों तरफ नालाएक लोग जमा हो गये। उन्होंने वजीर और बादशाह को लड़ा दिया। बायज़ीद मुल्तान से भाग कर अपनी रियासत अर्थात किला शूर में चला गया और मौका पाकर सिकन्दर लोदी के पास दिल्ली में अपना दूत भेजा और आज्ञापालन का बचन देकर अपने राज्य में उस के नाम का सिक्का चलाया और खुतबा जारी कर दिया। सिकन्दर लोदी इस से बहुत प्रसन्न हुआ और पंजाब के हाकिम दौलत खां लोदी को हुक्म दिया कि जरूरत के समय बायज़ीद की मदद करे। कुछ दिनों के बाद महमूद लंकाह ने किला शूर पर हमला किया। तुरन्त दौलत खां को सूचना भेजी गयी। उसने आकर फैसला किया कि रावी नदी दोनों की सीमा करार दी जाती है।

महमूद के करतूत इस काबिल न थे कि सल्तनत संभाल सकें लेकिन मलिक सुहराब जिस का वर्णन ऊपर गुजर चुका है वह दरबार में हावी हो गया जिस की वजह से सल्तनत की उम्र कुछ अधिक हो गई।

१५२३ ई० (६३० हि०) में बाबर बादशाह पंजाब पर काबिज हो चुका था। सिन्ध के हाकिम शाह हुसैन अरग़वान को आदेश भेजा कि तुम मुल्तान पर कब्जा कर लो। अरग़वान एक भारी फौज लेकर मुल्तान आ धमका। शाह महमूद लंकाह ने डर कर शैख बहाउद्दीन कुरैशी और मौलाना बहलोल को सुलह के लिए रवाना किया। मगर अरग़वान मौलाना की मीठी मीठी बातों से काबू में न आया। मजबूरन यह लोग वापस आ गए। १५२४ ई० (६३१ हि०) में वह २७ वर्ष हुकूमत करके मर गया।

महमूद के बाद उस का लड़का हुसैन शाह द्वितीय लंकाह तख्त पर

बेठा। मगर यह बच्चा था। इस लिए हुकूमत की बागडोर शैख शुजाउल मुल्क बुखारी के हाथ में आई जो महमूदशाह लंकाह का दामाद था मुल्तान के दुर्भाग्य से शुजाउल मुल्क भी सफल साबित न हुआ। मुल्तान में एक महीने की खाद्यवस्तु (रसद) मौजूद न थी मगर शुजाउलमुल्क ने किलाबन्द होना अधिक पसंद किया। फौज का सेनापति लंगर खां अरगवान से जाकर मिल गया। अरगवान ने किले की घेराबन्दी करली और मुल्तान की दशा यह थी कि कुत्ता और बिल्ली तक खाने पर लोग मजबूर हुए। आखिर एक साल कुछ महीनों की घेराबन्दी के बाद १५२६ई० (६३६ हि०) में किला फतह हो गया।

हुसैन शाह द्वितीय लंकाह और शुजाउलमुल्क बन्दी बना लिये गये और मुल्तान ख्वाजा शमसुद्दीन को सुपुर्द कर के अरगवान सिन्ध चला गया। लंगर खां ख्वाजा शमसुद्दीन का सहायक करार पाया।

लंगर खां चतुर और होशियार आदमी था। उसने पहले तो मुल्तान की बरबादी दूर की। प्रजा को तसल्ली देकर आबाद किया। जब इस प्रकार काफी प्रिय हो गया और शक्ति भी बढ़ाली तो एक दिन ख्वाजा शमसुद्दीन को निकाल कर मुल्तान पर खुद कब्जा कर बैठा।

१५३० ई० (६३७ हि०) में बाबर बादशाह का देहान्त हो गया और हुमायूं ने तख्त पर बैठ कर पंजाब का प्रान्त अपने भाई कामरान को सुपुर्द किया। मिर्जा कामरान ने लंगर खां को लाहोर तलब किया। वह जब आया तो उसको काबुल का सूबा सुपुर्द किया और मुल्तान को सल्तनत मुगलिया में शामिल कर लिया।

मुल्तान की स्वाधीन (खुद मुख्तार) सल्तनत का काम

मुल्तान का स्वतंत्र राज्य लगभग ८५ वर्ष रहा लेकिन अपनी उम्र के लिहाज से जितना काम उसको करना चाहिए था, वह न हुआ। इस का मुख्य कारण यह है कि मुल्तान एक सीमावर्ती स्थान होने की वजह से कौमों के हमलों का हमेशा निशाना रहा। इसलिए हर शासक को सुधार के काम के बजाय फौजी शक्ति को बढ़ाने पर समय और धन खर्च करना पड़ा।

बावजूद इन सारी कठिनाइयों के भी उनमें से बुद्धिमान शासकों को जब कभी कभी फुर्सत मिली उन्होंने इधर ध्यान दिया। शैख यूसुफ के जमाने में जमींदारों को काफी सुविधा दी गई। शाह लंकाह का काल स्वभाग्य का युग है। उसने अपनी विजय की सीमाएं बढ़ाईं। पंजाब की सीमा धनकोट से लेकर सिन्ध नदी के तट तक उस की सल्तनत हो गई। उसका फौजी प्रबन्ध भी प्रशंसनीय था। उसने अपनी फौज में लंकाह सिन्धी, मकरानी, बिलोची अधिकता से भरती किये जिस के कारण उसकी फौजी ताकत जबरदस्त हो गयी। नगद वेतन के बजाए अफसरों को बड़ी बड़ी जागीरें दी जाती थीं और साधारण सिपाहियों को वह जागीरदार वेतन देते थे। इल्म का भी वह बड़ा कद्रदां था। उसके दरबार में बड़े बड़े विद्वान हाजिर रहते थे और वह उनके साथ बड़े सम्मान का व्यवहार करता था। इस का यह प्रभाव पड़ता था कि मंत्री और सरदार भी विद्वानों का आदर करते थे।

चुनानचि उसका वजीर बायजीद विद्वानों को सम्मान देने में मशहूर हो गया था। खुरासान और हिन्दुस्तान से अधिकांश विद्वान वहां आकर बस गये। शैख जमालुद्दीन कुरैशी इस दरबार से लाभान्वित (फैजयाब) हुए। मौलाना फतहउल्लाह मौलाना अजीजुल्लाह इस जमाने के बाकमाल लोगों में हैं। शैख बहाउद्दीन इस काल के सूफियों में सर्वश्रेष्ठ (मुम्ताज) थे और मौलाना बहलोल भाषण (तकरीर) देने में सब से श्रेष्ठ थे। काजीमुहम्मद भी इसी युग के मशहूर उलमा में से थे।

मदरसे भी जगह जगह जारी थे। उनमें से मुख्य जामई मदरसा अधिक मशहूर था। इस के प्रधान अध्यापक (सदरमुदर्रिस) मौलाना इब्राहीम जामई इस मदरसे में पढ़ाते रहे। मौलाना सईदुद्दीन लाहोरी भी इस मदरसे के अध्यापक थे। जो बाद में प्रधानाचार्य हो गये। इस जमाने में इल्मे फिकहः (इस्लामी कानून) का बड़ा जोर था यहां तक कि दरबर में भी हिदायः और शरह वकायः का चर्चा था।

बादशाह और वजीरों को इमारतों का भी शौक था। बहुत सी इमारतें बनती गयीं। मुल्तान के दूत को गुजरात जाते समय खास निर्देश दिया गया था कि वहां इमारतों को देखे ताकि उस प्रकार की इमारतें यहां भी तैयार की जाएं। दूसरे देशों से दूत भी आते जाते रहते।

चुनानचि दिल्ली, कशमीर, गुजरात, सिन्ध और खुरासान से दूतों की हमेशा आवाजाही रहती सीमावर्ती स्थान होने के कारण घोड़ों का व्यापार अधिकतर होता जो खुरासान से आते।

(जारी)

अनुवाद : हबीबुल्लाह आज़मी

शुक्रे ख़ुदाए पाक

इदारा

"सच्चा राही" का आरंभ अभी कल ही की तो बात है, परन्तु यह क्या! हमारे सामने तो पांच फाइलों की जिल्दें रखी हैं और छठी फाइल जिल्द बन्दी के लिये तैयार है, अर्थात छे वर्ष बीत गये, इसी प्रकार जब क़ियामत का मंज़र (दृश्य) लोग देखेंगे तो कहेंगे कि दुन्या में तो हम एक सुब्ह या एक शाम रहे होंगे।

निःसन्देह सच्चा राही ने अपने छः वर्ष पूरे कर लिये और इस अंक से सातवां वर्ष आरम्भ हुआ। हज़ार हज़ार शुक्र है ख़ुदाए पाक का कि इन छः वर्षों में २८८० पृष्ठ लिखे छापे और पाठकों तक पहुंचाएं गये। अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है कि इन पृष्ठों में जो अच्छी और काम की बातें हैं वह पाठकों को याद रहें और वह उन से लाभान्वित हों और जो बातें जाने या अनजाने लाभ रहित अथवा ग़लत छप गई हों अल्लाह तआ़ला उनको हमारे पाठकों के मस्तिष्क से निकाल दें और जिन भूल चूक की बातों से हमारे लेखकों और पाठकों को कष्ट हुआ हो दुख पहुंचा हो वह हम को क्षमा कर दें एवं अल्लाह तआ़ला से यह भी दुआ़ है कि अगले वर्ष हमें अच्छी अच्छी लाभकारी बातें लिखने छापने का सामर्थ्य दे।

अब तक हम "सच्चा राही" के प्रकाशन की जिस बात पर अत्यधिक लज्जित हैं वह है शब्दों की त्रुटियों का पकड़ में न आना और उन का गलत छप जाना। अभी जनवरी के अंक में जनाब क़ारी हिदायतुल्लाह साहिब की एक नअत छपी जिस की पहली लाइन थी : "गुलशन से तुम को प्यार है रग़बत है फूल से" पहला शब्द "गुलशन", "गुशलन" छप गया, बड़ी लज्जा के साथ क़ारी जी से क्षमा याचना करनी पड़ी, इस प्रकार की कई त्रुटियां पत्रिका में रह जाती हैं, हर बार कोशिश की जाती है परन्तु ग़लतियां रह ही जाती हैं। वास्तव में प्रूफ़ रीडिंग की उचित विधि अपनाने में रूकावट आ जाती है। प्रूफ़ रीडिंग की उचित विधि यह है कि प्रूफ़ रीडिंग अकेले न की जाए एक आदमी ओरीजनल लेख ले दूसरा कम्पोज़ मैटर ले कर ज़ोर ज़ोर से पढ़े पहला मिलाता और करेक्शन करता जाए फिर जब कम्पोज़ीटर करेक्शन बना ले तो फिर दो आदमी चेक करें, इस प्रकार आशा है त्रुटियां न रहेंगी परन्तु कुछ न कुछ तो रहें गी ही। परन्तु बहुधा ऐसा होता है कि जल्दी में अकेले ही प्रूफ़ रीडिंग करना पड़ती है।

अल्लाह का लाख लाख शुक्र है कि जो भी हिन्दी जानने वाला मुसलमान सच्चा राही देखता है पसन्द करता है, इसे हमारे कुछ हिन्दू भाई भी पढ़ते हैं। सच्चा राही जिस हिन्दी भाषी मुसलमान को दिखाया जाता है वह इसे पढ़ना चाहता है और जिस की भी जेब अनुमति देती है वह ख़रीदार बनने को तैयार हो जाता है, अतः हम अपने पाठकों से अनुरोध करते हैं कि अगर वह पसन्द करें और इस काम में कोई बाधा न हो तो दो काम करें, एक यह कि ख़ुद पढ़ने के पश्चात परचा किसी और को भी पढ़ने को दें, दूसरे जिन के विषय में ज्ञात हो कि उनकी जेब में गुंजाइश है उन से हल्के से हमारी ओर से प्रार्थना करें कि सम्भव हो तो ख़रीदार बन जाएं। यदि हर पाठक किसी एक से यह बात कर लेगा तो इन्शाअल्लाह बड़ी संख्या में ख़रीदार बढ़ जाएंगे। हम आदमी रख कर यह काम इस लिये नहीं करते कि मौजूदा चन्दे में इतनी गुंजाइश नहीं है कि उस आदमी का ख़र्च बच सके।

आप को ज्ञात होना चाहिए कि हमारे सच्चा राही आफ़िस से तीन पत्रिकाएं पोस्ट होती हैं, सच्चा राही हिन्दी, तामीरे हयात उर्दू, तीमीरे हयात पन्द्रह दिन पर निकलता है इस का सालाना चन्दा २०० रूपया है, इंग्लिश पत्रिका 'फ़्रेग्रेन्स' निकलती है इसका सालाना चन्दा १०० रूपया है।

माशाअल्लाह हमारा स्टाफ़ बड़ा चाक चौबन्द है, जनाब मक़बूल अहमद नदवी, जनाब नियाज़ अहमद , जनाब मंज़र सुब्हानी, जनाब मुहम्मद अ़ली जाफ़री और जनाब हुसैन अहमद साहिब, यह सभी हज़रात तीनों पत्रिकाओं के विभिन्न दफ़्तरी काम पूरा करते हैं जब कि नव युवक मुहम्मद अरशद पैकिंग व पोस्टिंग का काम पूरी चौकसी से करता है।

बड़े खेद की सूचना है कि मुहम्मद अरशद के पिता मुहम्मद मुर्तज़ा जो अभी जवान ही थे और पैकिंग व पोस्टिंग का काम पूरी तरह संभाले हुए

थे २० सितम्बर २००७ अनुकूल ८ रमजान १४२८ हि० को अल्लाह को प्यारे हो गये, मुहम्मद अरशद ने जो सानवी (सिकन्ड्री) कक्षाओं का छात्र था अपनी मां और भाई बहनों की सेवा हेतु पढ़ाई छोड़ अपने बाप का कार्य संभाल लिया पाठकों से अनुरोध है कि मुहम्मद मुर्तज़ा मरहूम की मग़्फ़िरत और उनके घर वालों को सब्र की तौफ़ीक़ की दुआ करें। "सच्चा राही" के एडीटर और उसके सहायकों का नाम तो फ़र्स्ट पेज पर छपता ही है इसी प्रकार उस के प्रकाशक का नाम भी अंकित होता है। मैनेजर का शुभ नाम डॉ० मुईद अशरफ है, और कम्पोज़ीटर मुहम्मद सलमान अन्सारी साहिब हैं। हमारे इदारे नदवतुल उलमा के रैक्टर जनाब मौलाना सय्यिद मुहम्मद राबे हसनी और मुअ्तमद तअ्लीम मौलाना सय्यिद मुहम्मद वाज़िह रशीद नदवी की इच्छा और उनके संकेत ही से सच्चा राही आरंभ हुआ और उन दोनों की तवज्जुह एवं नदवे के जनरल सिक्रेटरी (नाज़िरे आम) जनाब मौलाना मुहम्मद हम्ज़ा हसनी के निर्देशों से सच्चा राही गतिशील तथा वेगवान है।

हम ने सच्चा राही के परिवार का उल्लेख इस लिये किया ताकि हमारे पाठक इस परिवार से परिचित हो सकें और परिवार जनों को अपनी दुआओं में याद रखें।

सच्चा राही के नये साल में हम एक नया शीर्षक ला रहे हैं वह है : "हिन्दी लिपि में उर्दू शब्दों का उच्चारण" हमें आशा है कि हिन्दी भाषियों को इस से लाभ पहुंचेगा। इस शीर्षक के अन्तर्गत हम वही शब्द ला रहे हैं जिन के उच्चारण से हमारे निकट हमारे अधिकांश हिन्दी भाषी अपरिचित हैं वैसे हमारे पाठक जिन उर्दू शब्दों का उच्चारण जानना चाहेंगे हम उनको भी इस में सम्मिलित करेंगे।

हमारे पाठकों को यह ज्ञात रहे कि हम उर्दू भाषा के लिये हिन्दी लिपि के घोर विरोधी हैं परन्तु अपने उन भाइयों तक जो उर्दू से अपरिचित हैं, केवल हिन्दी का ज्ञान रखते हैं उन तक अपनी बात पहुंचाने के लिए हिन्दी को माध्यम बनाने पर विवश हैं, हम इस्लाम के दाअी (आवाहक) हैं, हम अपने लेख में उर्दू अर्थात अ़रबी फ़ारसी शब्द लाने पर मजबूर हैं, अतः उन के शुद्ध उच्चारण से अपने पाठकों को परिचित कराना आवश्यक जानते हैं इस लिये कि बहुधा उच्चारण बदल जाने से अर्थ बदल जाता है।

इस शीर्षक के अंतरगत हम उर्दू शब्दों को उर्दू में न लिखेंगे केवल हिन्दी लिपि में लिखेंगे परन्तु अपने पाठकों से यह अनुरोध अवश्य करेंगे कि वह उर्दू जानकारों से उन शब्दों के शुद्ध उच्चारण प्रमाणित करा लिया करें विशेषकर अक्षरों के मख़ारिज (उच्चारण स्थान) तो बिना सीखे आही नहीं सकते, इन को तो लिखकर सिखाया ही नहीं जा सकता, बोल कर ही सिखाना पड़ेगा।

(पृष्ठ ४ का शेष)

हुई औलाद की सिफ़ारिश से गुनाहों की सज़ा पूरी करने से पहले जहन्नम से निकाल कर जन्नत पहुंचा दिये जाएंगे। अ़जीब बात है कि जहन्नम की आग जो दुन्या की आग से सत्तर गुना ज़ियादा तेज़ है उस में कोई मरेगा नहीं। अब तो हमेशा वाली ज़िन्दगी शुरूअ़ हो चुकी है। अब मौत कहां? अल्लाह तआ़ला हम सब को जहन्नम के अ़ज़ाब से बचाए आमीन।

यह दुन्या और इस पर की आबादी अल्लाह की मख़्लूक़ हैं, सूरज, चांद, तारे, सारे आसमान अल्लाह की मखलूक़ हैं, सारे शम्सी निज़ाम (सूर्य मन्डल व्यवस्थाएं) सारी कहकशाएं (आकाश गंगाएं) अल्लाह की मखलूक़ (सृष्टि) हैं, यह जन्नत और जहन्नम भी अल्लाह की मख़लूक़ हैं, अल्लाह ने अपने पैग़म्बरों के ज़रीअे जो कुछ बताया सब हक़ (सत्य) है। अल्लाह की मस्लहतों में मख़लूक़ को कोई दख़ल नहीं, जहन्नम का अ़ज़ाब हक़ (सत्य) है। जन्नत की निअ़मतें और वहां के इनआ़मात हक़ (सत्य) हैं। अल्लाह ने अपने करम से दुन्या की ज़िन्दगी इस लिए दी ताकि हम इसमें कमाई कर के उसको प्रसन्न करें आर जन्नत के इनआ़मात (पुरस्कार) हासिल करें और इस दुन्या में बुरे कामों से बच कर अपने को जहन्नम के अ़ज़ाब से बचा सकें, इस लिहाज़ से यह दुन्या हमारे लिये बहुत ज़रूरी थी और यह बड़े काम की है पस हम इस दुन्या की क़दर करें और इस के ज़रीअे अपनी आख़िरत संवारे। इस सब के बावजूद बहुत से अ़क़्लमन्दों ने दुन्या से बचने की तल्क़ीन की है और इसे बुरा कहा है जिस दुनिया को बुरा कहा गया उस दुन्या से क्या मुराद है इस पर गुफ़्तगू फिर किसी मौक़िअ़ से होगी। (इन्शाअल्लाह)

सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा

(पहली किस्त)

हम कैसे पढ़ायें ?

(शिक्षा विद् डॉ० सलामत उल्ला एम०एससी० बी०टी० (अलीग), ईडीडी (कोलम्बिया) प्रिंसपल टीचर्स कालेज जामे मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली ने सन् १९४२ में अध्यापकों के प्रयोगार्थ एक किताब 'हम कैसे पढ़ायें?' लिखी थी। किताब के अब तक कई एडीशन प्रकाशित हो चुके हैं। अध्यापक बन्धुओं के लिए "सच्चा राही" पुस्तक का हिन्दी रूपान्तर किस्तवार पेश कर रहा है। रूपान्तरकार 'सच्चा राही' के सह–सम्पादक एम हसन अंसारी हैं जिनको शिक्षा के क्षेत्र में अध्यापन प्रबन्धन, अध्यापक प्रशिक्षण तथा प्रशासन का लगभग चालीस साल का अनुभव प्राप्त है।

समर्पण

उन उस्तादों के नाम जिनके नजदीक मुअल्लिमी (शिक्षण) का पेशा महज रोटी कमाने का जरिया नहीं बल्कि अपनी तख्लीकी (सर्जनात्मक) कूवतों के इजहार और इन्सानियत की खिदमत का वसीला है।

आमुख

लगभग चार साल हुए "हम कैसे पढ़ायें?" पाठकों के लिए पहली बार पेश की गई थी। उस समय इस बात का अन्दाजा नहीं था कि इसे हमारी शिक्षा संस्थाओं में किस हद तक पसन्द किया जायेगा। लेकिन इस के बावजूद कि युद्ध काल (द्वितीय विश्व युद्ध १९३९–४५) में किताब के प्रकाशन और विक्रय की मामूली सहूलतें हासिल नहीं थीं, किताब का पहला एडीशन जल्द ही निबट गया। और लेखक के प्रयास को सराहा गया।

"हम कैसे पढ़ायें" का यह दूसरा एडीशन आप के सामने हैं। जी तो बहुत चाहता था कि अपने और अध्ययन तथा अनुभव की रोशनी में इस में काफी तबदीलियां कर दी जातीं लेकिन समय और फ़ुरसत की कमी और प्रकाशकों के प्रेममय तकाजः ने इसका मौका नहीं दिया। फिर भी जहां तक हो सका किताब की इस्क्रिपट में संशोधन कर दिया गया है।

आज हमारे मुल्क के सामने जहां और बहुत से रचनात्मक समस्यायें हैं वहां कौमी तालीम की समस्या भी विशेष ध्यान का केन्द्र बनी हुई है। अतएव हिन्दुस्तान की हुकूमत की तरफ से युद्ध के बाद शैक्षिक विकास की एक ठोस तथा विस्तृत स्कीम पेश की गई है जिसमें बुनियादी तौर पर इस बात को मान लिया गया है कि छः से चौदह साल तक की उम्र के तमाम लड़के और लड़कियों की तालीम की जिम्मेदारी राज्य को लेनी चाहिए। इससे कम पर राजी होने की सूरत में तालीम अधूरी और बेअसर रहेगी। और यह कि शिक्षा अनिवार्य हो और मुफ्त हो। हर सूबे में भी इसी को सामने रखते हुए तालीमी स्कीमें बनाई गई हैं। अगर इन पर अमल हुआ, जैसी कि हमें उम्मीद है, तो सब से पहले उस्तादों की तालीम पर खास ध्यान देना होगा।

इस में कोई शक नहीं कि तालीम के काम में सब से अधिक महत्वपूर्ण शिक्षक हैं। किसी कौम की तालीम निजात का जरियः न तो विद्यालय की आलीशान इमारत हो सैकती है और न अच्छे सा अच्छा पाठ्यक्रम या दूसरी साज–सज्जा बल्कि यह बाख़बर और हमदर्द उस्ताद पर निर्भर है जो मेहनत और निष्ठा से बच्चों की उगती हुई पौध को परवान चढ़ाता है। अतः शिक्षकों की ट्रेनिंग की समस्या बहुत महत्वपूर्ण है। अब तक (१९४६) इस मकसद से हमारे मुल्क के अलग अलग इलाकों में जो ट्रेनिंग कालेज या नार्मल स्कूल खोले गये हैं वह बड़ी कठिनाइयों में काम कर रहे हैं, इन में शिक्षण का माध्यम सामान्यतः अंग्रेजी है कहीं कहीं मातृ भाषा में भी शिक्षण होता है। लेकिन हिन्दुस्तानी भाषाओं में इस विषय से सम्बन्धित लिट्रेचर मौजूद नही है इस लिए अंग्रेजी किताबों से अनुवाद करके काम चलाया जाता है। नार्मल स्कूल के ट्रेनीज को जो आमतौर से अंग्रेजी नहीं जानते या अगर जानते भी हैं तो बहुत मामूली, अपने गुरूओं पर निर्भर करना पड़ता है। इनकी मालूमात का दारोमदार या तो उस्तादों के लेकचर पर होता है या उन नोट्स पर जो वह लेकचर के दौरान लिख लेते हैं। उनके पास कोई ऐसी किताब नहीं होती जिस से वह स्वयं

अपने अभ्यास के लिये आवश्यक विषय वस्तु प्राप्त कर सकें। पिछली सदी की अन्तिम दहाई में नार्मल स्कूल समाप्त कर के उनकी जगह डिस्ट्रिक्ट इन्स्टीट्यूट आफ एजूकेशन एण्डट्रेनिंग (DIET) कायम हो चुके हैं और इनमें उत्तर प्रदेश में शिक्षण माध्यम हिन्दी है। आवश्यकतानुसार माध्यम उर्दू भी होना चाहिए। (रूपान्तरकार) तालीम किस जबान में दी जाये इस पर दो राय नहीं हो सकती कि मातृ भाषा के अलावा किसी और भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाना न केवल अस्वाभाविक है बल्कि मानसिक विकास के लिये हानिकारक है। विचारों में शुद्धता और सफाई केवल मातृभाषा के ही द्वारा पैदा हो सकती है। अकसर देखा गया है कि हमारे अंग्रेजी पढ़े लिखे नौजवानों के विचार उलझे हुए होते हैं और उनकी अभिव्यक्ति (इजहार) में वह बेतकल्लुफी तथा सहजपन नहीं होता जो कि मातृ भाषा की विशेषता है।

इस गरज से उर्दू में यह किताब लिखी गयी है कि हमारे उस्ताद पढ़ाने के आर्ट के बारे में उन बुनियादी बातों से वाकिफ हो जायें जिन पर सफल शिक्षण निर्भर है। इसमें प्रारम्भ के कुछ अध्याय शिक्षा के स्तर अथवा पाठ्यक्रम के लिये हैं। और शेष शिक्षण–कला के विभिन्न पहलुओं से सम्बन्धित हैं जिन में शिक्षण की आम पद्धतियों से बहस की गयी है।

"पद्धति" (मेथड) अध्यापक की नोट बुक में पाठ की बेगानगी (अटपटापन) और आत्मा विहीन (बेरूह) तरतीब का नाम नहीं है। सही मेथड यह है कि बच्चे के मानसिक सोच के अमल को उभारा जाये ताकि वह एक खास मंजिल पर बेहतरीन रास्ते पर पहुंच सके। शिक्षण के सफर में अध्यापक एक मार्गदर्शक की हैसियत रखता है और बच्चा एक अनुयायी (रहरौ) की जिसे एक नामालूम मंजिल पर पहुंचना है। रहरौ के जेहन में उस की मंजिल की एक धुंधली सी तस्वीर तो जरूर होती है लेकिन उसे रास्ते मालूम नहीं होता, उसका रहनुमा (गाइड) यह दोनों चीजें अच्छी तरह जानता है। अगर बगैर रहनुमा के मुसाफिर को अपने हाल पर छोड़ दिया जाये तो वह भी अपनी मंजिल पर पहुंचने की कोशिश करेगा। लेकिन अक्सर वह अपने रास्ते से भटक जायेगा। क्योंकि रास्ता इतना सीधा नहीं है कि कोई उस पर आंखें बन्द करके चला जाये। इस में हर हर कदम पर विभिन्न पगडंडियां फूटती हैं। मुसाफिर एक पगडंडी पर चलेगा मगर जब थोड़ी दूर जाकर महसूस करेगा कि यह गलत रास्ता है तो फिर ठीक रास्ते पर आने की कोशिश करेगा। और इस तरह उसका बहुत सा समय और मेहनत बेकार होगी। रहनुमा सफर का इन्तेजाम इस खूबी से कर सकता है कि मुसाफिर बेहतरीन रास्ते से मंजिले मकसूद पर पहुंच जाये। लेकिन याद रहे कि वह मात्र रहनुमाई कर सकता है, रास्ता मुसाफिर ही को तय करना होगा।

सफर की व्यवस्था अध्यापक के पाठ की तरतीब (लेसन प्लान) के अनुरूप है। जब तब मुसाफिर अर्थात विद्यार्थी स्वतः सफर की जरूरत महसूस न करेगा या चलने के लिये तैयार न होगा, आगे कदम नहीं बढ़ा सकता। बहुत से सबक ऐसे होते हैं जिन्हें उस्ताद "पढ़ाता" है और विद्यार्थी बैठा हुआ सुनता रहता है लेकिन समझने की बिल्कुल कोशिश नहीं करता। गोया रहनुमा खुद सफर करता है और अपने दिल को किसी तरह समझा लेता है कि मुसाफिर भी उसके साथ मंजिले मकसूद की तरफ बढ़ रहा है लेकिन यह बात एक खुशनुमा फरेब से ज्यादा हकीकत नहीं रखती। गरज सबक कितनी ही खूबी से तरतीब दिया गया हो इस से कोई फायदा नहीं हो सकता जब तक बच्चे अपनी कोशिश से इस रास्तेपर नहीं चलते जिसका नकशा उन्हें बताया गया है। हकीकी तालीम इसके सिवा और कुछ नही कि बच्चों में सीखने की ख्वाहिश और लगन पैदा कर दी जाये।

प्रभावी शिक्षण की पहली शर्त है सीखने की जरूरत महसूस कराना। उस्ताद का फर्ज है कि अपने छात्रों के दिल में एक एहसास पैदा कर दे कि वह जो कुछ सीखेंगे फायदेमन्द होगा। वह उन्हें उन चीजों के समझने और करने के काबिल बनायेगा जो समझने और करने के लायक हैं। अगर खुदानाख्वास्ता बच्चों में वह बातें सीखने, समझने और करने की ख्वाहिश समाप्त हो गई जो दूसरे सीखते, समझते और करते हैं तो शिक्षण का कार्य बहुत मुश्किल हो जायेगा। लेकिन खुश किस्मती से बच्चों में दूसरों की बराबरी करने की तमन्ना पैदाइशी तौर पर पायी जाती है जो कि दर असल सीखने के अमल की जड़ है।

समाजी जिन्दगी को मालामाल करने के लिए जिन चीजों की जरूरत है उन्हे बच्चा स्वतः सीखना चाहता है और किसी हद तक अपने तौर पर

सीखता भी है लेकिन अगर उस की ठीक तरह रहनुमाई न की जाये तो बहुत सा समय और मेहनत यूं ही बेकार होती है। इस लिये अब "तरीकः" से मतलब सिर्फ पढ़ाने पर नहीं होता बल्कि इस का क्षेत्र बहुत बढ़ गया है। अब विद्यालय को समाज का एक छोटा सा नमूना बनाने पर इसी लिये जोर दिया जा रहा है कि इस में सीखने सिखाने के बेशुमार स्वाभाविक अवसर पैदा होते हैं। बुनियादी कौमी तालीम के प्रस्तावित तरीके और प्रोजेक्ट मेथड में यही सिद्धान्त काम करता है जिसका इस किताब में जगह जगह जिक्र किया गया है।

जहां तक मकसद का तअल्लुक है उस्ताद और बच्चे अलग अलग हैसियत रखते हैं उस्ताद इसे साफ तौर पर जानता है मगर बच्चों के जेहन में महज इसका एक धुंधला सा खाका होता है। मसलन उस्ताद बच्चों में पतंग बनाने, तैरने या कोई गैरमुल्की जबान सीखने की ख्वाहिश पैदा कर सकता है, लेकिन शुरू में बच्चे को अपने मकसद और उसके नतीजे की साफ तस्वीर नहीं होती। बच्चा किसी काम में ज्यों ज्यों तरक्की करता है उसके सामने मकसद ज्यादा साफ होता जाता है। मगर उस्ताद के लिये इन कामों का मकसद और अमल का बखूबी जानना बहुत जरूरी है। इसके बिना पढ़ाने या सिखाने में बाकायदगी और नियम कानून की बात पैदा नहीं हो सकती। इस सूरत में डर है कि या तो उस की रहनुमाई में मकसद हासिल नहीं होगा या अगर संयोगवश हासिल भी हो गया तो इस में अनावश्यक मेहनत और समय खर्च करना होगा। अतः उस्ताद को शिक्षा की विषय वस्तु, उसके मकसद और सिखाने के तरीके सभी से वाकिफ होना चाहिए।

लेखक को इस बात का अच्छी तरह एहसास है कि यह किताब बहुत संक्षिप्त है लेकिन इस बात का यकीन जरूरी है कि इसे पढ़ने और समझने के बाद हर उस्ताद के दिल में शिक्षण की खास खास समस्याओं पर सोचने और अमल करने की ललक पैदा हो जायेंगी।

यह किताब अधिकांश शिक्षण कला से सम्बन्धित प्रमाणित अमरीकी और इंग्लिस्तानी किताबों पर आधारित है। लेकिन हिन्दुस्तान की मौजूदा (१९४६) तालीमी हालत, यहां के स्कूलों की विशेष समस्यायें और अध्यापकों की कठिनाइयों को हरजगह निगाह में रखने की कोशिश की गई है। आशा है कि यह पुस्तक हमारे अध्यापकों की व्यवहारिक जरूरत को एक हद तक पूरा करने में कामयाब होगी।

इस विचार से कि यह किताब बाजट्रेनिंग स्कूलों में पाठ्यपुस्तक के तौर पर इस्तेमाल की जायेगी, इसे कच्चे उस्तादों के लिये ज्यादा फायदेमन्द बनाने की कोशिश की गई है। अतएव हर अध्याय के अन्त में एक सुझाव और सन्दर्भ हेतु पुस्तकों का हवाला इसी उद्देश्य से दिया गया है। आशा है कि इस की मदद से बच्चों के विचार अधिक स्पष्ट हो जायेंगे और उनमें और अध्ययन का शौक पैदा होगा।

इस किताब के पहले एडीशन की तैयारी में लेखक को अपने हितैषी साथी डॉ० सैयद आबिद हुसैन साहब से जो खास मदद मिली थी इस के लिए वह उनके प्रति आभार व्यक्त करता है कि उनके मार्गदर्शन व मदद के बिना यह काम बहुत कठिन था। मैं अपने दोस्त हामिद अली खां साहब के प्रति भी आभारी हूं कि बड़ी हद तक उनकी प्रेरणा का इस नये एडीशन के छपने में हाथ है। (जारी)

सलामतुल्लाह
जामिया नगर, देहली
३१ मई १९४६

नअ़त

ताबिश महदी देहली

नअ़ते नबी लिखने के लिये
जब ले के क़लम हम बैठे हैं
लफ़्ज़ों ने आदाब किया
अफ़्कारे दरख़्शां बरसे हैं
सरवरे आ़लम इस दुन्या में
रह़मत बन कर आए हैं
बाबे जिहालत बन्द किया है
ह़िक्मत के दर खोले हैं।
फ़िक्रो नज़र की सौग़ातें दीं
दीन दिया क़ुर्आन दिया
दुन्या वालों पर आक़ा ने
क्या क्या ह़ुन बरसाए हैं
अख़्लाक़ो किर्दार का जिस के
ज़िक्र है सारे आ़लम में
हाए उसी पर जेह़्ल ज़दों ने
संगे मलामात फेंके हैं
जिन लोगों ने आक़ा के
अख़्लाके ह़सन को अपनाया
वह दुन्या में रुश्दो हुदा का
सूरज बन कर चमके हैं
हम को तो बस ह़ुक्मे नबी पर
जान निछावर करनी है
जान की क़ीमत हम क्या जानें
हम तो ह़ुक्म के बन्दे हैं
प्यारे नबी से जलने वाले
सारे जहां में हैं रूस्वा
मश्रिक़ से मग़्रिब तक ताबिश
प्यारे नबी के जल्वे हैं

स्वतंत्रता सेनानी मोलवी अहमदुल्लाह शाह

हबीबुल्लाह आजमी

मोलवी अहमदुल्लाह शाह चंपाटन (मदरास) के रहने वाले थे। उनके पूर्वज चंपाटन के नवाब थे जिनका सम्बन्ध कुतुबशाही खानदान से था। यह तानाशाह के पोते थे। उनको अरबी, फारसी और अंग्रेजी में महारत प्राप्त थी। उन्होंने जंगी तर्बियत भी हासिल की थी। उन्होंने लन्दन, यूरोप के दूसरे देशों इरान, इराक आदि और दूसरे अरब देशों की यात्रा भी की और हज करने के बाद हिन्दुस्तान लौटे। उनकी रूचि फकीराना जीवन व्यतीत करने की थी और जयपुर के हजरत फरमान इलाही के हाथ पर बैअ़त (भक्ति प्रतिज्ञा) की। उन्होंने उनका नाम अहमदुल्लाह शाह रखा और अपना खलीफा घोषित किया। वहां से वह ग्वालियार पहुंचे और मेहराबशाह कलन्दर के भक्त हो गए।.

उन्होंने अहमदशाह को अंग्रेजों के खिलाफ जिहाद करने की प्रेरणा (तरगीब) दी। उन्होंने लखनऊ और उत्तरी भारत के कई शहरों की यात्रा की और बड़ी संख्या में लोगों को अपना भक्त बनाया। लोगों से बैअ़त लेने के साथ ही वह इनक्लाबी संघर्ष का आदेश भी देते। उनके जादुई भाषण से हजारों मुसलमान, हिन्दू, ईसाई उनकी टोली में शामिल होते चले गए। इलाहाबाद के बाबू बेनी प्रसाद वकील और फरांसीसी धर्मोपदेशक (मुबल्लिग) मिस्टर जोज़फ़ जो बाद में मुसलमान होकर यूसुफ अली के नाम से मशहूर हुए, उनके प्रिय अनुयायिओं में थे। और यह सभी लोग स्वतंत्रता संग्राम में उनके साथ थे।

उनके उपदेश की महफिलों में ईश्वर भक्ति के साथ देश भक्ति के भी निर्देश होते। भोज में छोटी छोटी रोटियां भी बांटी जातीं जिनको यह रोटियां मिल जातीं उन पर विदेशी शासकों के खिलाफ जिहाद फर्ज हो जाता। मुसलमानों को रोटियों के साथ दो बोटी, और हिन्दुओं को रोटियों के साथ कमल के फूल की तकसीम का सिलसिला चलाया जाता जो एलाने जंग और इन्कलाब का चिन्ह था।

शाह साहब ने अवध को अपना केन्द्र इस कारण बनाया था कि अवध की जनता के प्रिय नवाब वाजिद अली शाह को अंग्रेजों ने कलकत्ता में नजर बन्द कर दिया था और अवध की हुकूमत को अपने नियंत्रण में ले लिया था। जिसकी वजह से लोगों में अंग्रेजों के खिलाफ बहुत ही क्रोध था जिसको वह अमली शकल देकर अंग्रेजों को भारत से निकालना चाहते थे।

अंग्रेज अफसरों ने कोशिश की कि वह वहां से निकल जायें लेकिन उन्होंने जाने से इनकार कर दिया। आखिरकार लड़ाई की नौबत आ गई। फौज उनके मुकाबले पर आई। अन्धाधुंध गोलियां चलीं। बहुत से लोग मारे गये। कैप्टन टामस व अन्य अंग्रेजी सिपाही घायल हुए। मोलवी अहमदुल्लाह शाह को गिरफतार करके फौजी छावनी में कैद किया गया। मौत की सजा सुनाई गई लेकिन ६ जून को फैजाबाद में बग़ावत हो गई और बाग़ियों ने उन्हें रिहा करा लिया। उन्होंने बग़ावत की कमान अपने हाथ में ले ली और फैजाबाद अंग्रेजों से खाली करा लिया और लखनऊ की तरफ कूच किया। रास्ते में २६ जून को अंग्रेजों से फिर मुकाबला हुआ। खुद भी घायल हुए लेकिन अंग्रेजी फौज अपने ११२ यूरोपियन सिपाहियों को मुर्दा और ४४ को घायल छोड़ कर भाग खड़ी हुई। उन्होंने लखनऊ पर कब्जा कर लिया लेकिन हजरत महल के सिक्रेटरी मुहम्मद खां से कई बातों में विरोध पैदा होने के कारण वह अपने मुजाहिदीन के साथ रोहेल खण्ड की ओर चले गये। शाहजहांपुर के निकट उनका मुकाबला फिर अंग्रेजों से हुआ लेकिन अब पांसा पलट चुका था। हर तरफ से अंग्रेजी फौज सफल हो रही थी और हिन्दुस्तानी फौजों की पराजय की खबरें आ रही थीं वह लखनऊ की सुरक्षा के लिए वहां पहुंचे तो पराजय की स्थिति देख कर बेगम हजरत महल को वहां से सुरक्षित निकाल कर नेपाल की तरफ भेजा और खुद मैदान जंग में डटे रहे। उसके बाद शाहजहांपुर के रास्ते लखीमपुर के कसबे मुहम्मदी में जनरल बख्त खां, डॉ० वजीर खां, मोलवी फैज अहमद बदायूनी, नाना रावपेशवा, अजीमुल्लाह खां और मोलवी सरफराज अली से परामर्श कर के लखीमपुर में हुकूमत कायम की। शाहजादा फीरोज वजीर बनाए गये, जनरल बख्त को कमान्डर बनाया गया। शाह साहब को हुकूमत का अमीर बनाया गया। अंग्रेजों ने शाह साहब के सिर की कीमत पचास हजार रूपया मुकर्रर की थी जिस की

लालच में आकर राजा जगन्नाथ सिंह और उसके भाई बलदेव सिंह ने उन्हें अपने यहां बुलाया और १५ जून १८५७ को उनका सिर काट कर शाहजहांपुर के कलक्टर को पेश किया। लोगों को भयभीत करने के लिए उनके सिर को सारे शहर में नुमाइश की गई और लाश टुकड़े टुकड़े करके जला दी गई।

कई अंग्रेज फौजियों ने उनकी बहादुरी, हिम्मत और देशभक्ति की प्रशंसा की। करनल सर थामस ने लिखा है कि "मोलवी अहमदुल्लाह शाह बड़े जीयाला, जवां मर्द योग्य, अनुभवी, धुन के पक्के थे। उन्होंने दो बार कमाण्डर इंचीफ कालन कैम्बल को पराजित किया।

होम्ज कहता है कि बगावत के दर्मियान जो लोग हमारे खिलाफ लड़े उनमें वह (मोलवी अहमदुल्लाह शाह) सबसे अधिक योग्य, उत्तरी भारत में हमारा सबसे बड़ा दुश्मन और सबसे बड़ा इन्कलाबी खत्म हो गया।

एक दूसरे अंग्रेज अफसर करनल मेल्स का उनके बारे में कथन है कि यदि देश भक्ति, देश प्रेम की परिभाषा यही है कि वह वतन की आजादी के लिए योजना बनाए, नीति निर्धारित करे और अपनी जान पर खेल कर आजादी हासिल करने के लिए जंग करे और अपनी खोई हुई सुखसामग्री को अपने देश वासियों के लिए फिर से प्राप्त करे जो बलपूर्वक, धोखाधड़ी से उस के देश वासियों से छीन ली गई है, तो वह एक सच्चा देशभक्त था। उसकी कुर्बानी, शहादत और देश प्रेम हर देश और समुदाय के बहादुरों और सत्य के पुजारियों के दिलों में जगह पाने के योग्य है।

वीडी सावरकर ने अपनी पुस्तक १८५७में मोलवी अहमदुल्लाह शाह को श्रद्धांजलि पेश करते हुए लिखा है –

"इस बहादुर मुसलमान का जीवन इस हकीकत का प्रमाण है कि अपने इस्लामी आस्था में पूर्ण विश्वास और देश की मिट्टी से जज्बाती लगाव में कहीं कोई विरोध नहीं। इस्लाम का सच्चा अनुयायी, अपने दीन में गर्व और मात्रभूमि की खातिर शहादत को अपना अधिकार समझता है।

(पृष्ठ [illegible] का शेष)

मात्रा से लिखते हैं जैसे मुरक्कबे इज़ाफ़ी पैग़म्बरे इस्लाम, मर्दे क़वी वगैरह लेकिन आप के सच्चा राही ही में कुछ लेखों में यह मज्हूल जेर दो डैशों के बीच-ए-की शक्ल में दिखाती है जैसे पैग़म्बर—ए—इस्लाम इस में सहीह कौन है?

उत्तर : अस्ल में ज़ेरे मज्हूल का कोई चिन्ह हिन्दी में मौजूद नहीं है, इस लिये कि हिन्दी में ज़ेरे मज्हूल है ही नहीं हिन्दी दां ने इसे जब लिखा तो ए की मात्रा से लिखा, हमारे आंजहानी पंडित नन्द कुमार अवस्थी जिन्होंने पूरा क़ुर्आन मजीद देव नागरी लिपि में छापा है इस तरफ़ भी तवज्जुह दी और उन्होंने ए की मात्रा को टेढ़ा करके लिखा जैसे दीवाने गालिब, उन्होंने इस जेर को दूसरे अक्षरों की तरह ढाल लिया था अब मुझे मअ़लूम नहीं कि उन्होंने ने कम्प्यूटर में इसे फीड किया या नहीं मैं तो शुरूअ़ में कम्प्यूटर से बिना मात्रा के कम्पोज़ करा लेता और क़लम से टेढ़ी मात्रा बना कर छपवा लेता, मगर यह गाड़ी चल न सकी तो ए की मात्रा से कम्पोज़ कराने लगा, अलबत्ता ऐसा मुरक्कब जिस में पहला लफ़्ज़ ऐसा हो जिस का आख़िरी हर्फ़ (अक्षर) हाए हव्वज़ हो उसे हाए मुख़्तफ़ी भी कहें गे उस को ज़ेर देने के लिए आख़िरी हा को हटा कर दो डैशों के बीच में ए लाकर जेर लिखा जैसे मकतब—ए—इस्लाम, खान—ए—कअ़्बा, जिन लोगों ने मज्हूल ज़ेर के लिए दो डैशों के बीच ए को अपनाया उन्होंने इंग्लिश की ई से लिखा जैसे Diwan-E-Ghalib इंग्लिश में तो यह ठीक है लेकिन हिन्दी में मुझे पसन्द नहीं इस लिये कि फिर खान—ए—कअ़्बा और दीवान—ए—गालिब के पढ़ने में फर्क कैसे करेंगे। मैं दीवाने ग़ालिब और खान—ए—कअ़्बा लिखना पसन्द कर के इख़्तियार किये हुए हूं और कम्प्यूटर से ए की टेढ़ी मात्रा न होने के सबब दीवाने ग़ालिब को बर्दाश्त करता हूं, इसी तरह अपने साथियों और दूसरे लोगों के दीवान—ए—ग़ालिब को भी बर्दाश्त करता हूं। यह भी याद रहे कि जिस शब्द के अन्त में अलिफ़ हो उस को ज़ेर देने के लिये ए मिला कर लिखता हूं जैसे ख़ताए रोज़गार इसी तरह जिस लफ़्ज़ के आख़िर में या हो उसे जेर देने के लिये ये बढ़ा देता हूं जैसे नबिये मुकर्रम।

प्रश्न : एक शख़्स को दुआए क़ुनूत याद नहीं है वह वित्र की नमाज़ कैसे पढ़े?

उत्तर : उस को चाहिए कि जैसे भी हो दुआए क़ुनूत याद करने में लग जाए, सुस्ती न करे और जब तक दुआए क़ुनूत याद न हो दुआए क़ुनूत की जगह क़ुर्आने मजीद की यह दुआ पढ़ता रहे : रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या हसनतंव्व फ़िल आख़िरति हसनतंव्व क़िना अ़ज़ाबन्नार। इस दुआ को अनवार से सीख लें।

●●●

आपके प्रश्नों के उत्तर?

(इदारा)

प्रश्न : हम सऊदिया में नौकरी करते हैं, कई मसअलों में उलझे हुए हैं। पहली बात तो यह कि अस्र की नमाज़ बहुत पहले पढ़ना पड़ती है, अपने यहां के उलमा के मुताबिक़ अस्र के वक़्त से पहले ज़ुह्र के वक़्त ही में पढ़ते हैं। दूसरी बात यह कि यहां का इमाम नाइलान के मोज़ों पर मसह् कर लेते हैं जब कि हमारे यहां के उलमा बताते है कि सिर्फ़ चमड़े के मोज़ों पर मसह् करना चाहिए समझ में नहीं आता कि अस्र के वक़्त से पहले पढ़ी हुई नमाज़ दुहराऊं या सहीह् समझूं, नाइलान के मोज़ों पर मसह् करने वाले इमाम के पीछे पढ़ी हुई नमाज़ें दुहराऊं या सहीह् समझूं। वाज़ेह् रहे कि यहां जमाअत से नमाज़ न पढ़ूं तो मुश्किल में फंस जाऊंगा।

उत्तर : आप परेशान न हों सऊदिया के अकसर मुसलमान हंबली मस्लक पर अमल करते हैं और यह याद रहे कि हनफ़ी, शाफ़ई, मालिकी, हंबली बल्कि अहले हदीस मस्लक के बाहमी इख़्तिलाफ़ात बे बुन्याद नहीं हैं सब के पास किताब व सुन्नत के दलाइल हैं। यह अलग–अलग दलाइल के अस्बाब या तो किताब व सुन्नत के बअ़ज़ नुसूस के एक से ज़ियादा मफ़हूम के इम्कानात हैं, या नासिख़ व मन्सूख़ के इख़्तिलाफ़ात हैं किसी का मसअला मन मानी नहीं है। जहां तक अस्र के वक़्त की बात है तो इस में तो ख़ुद अहनाफ़ में इख़्तिलाफ़ है, कोई कहता है साय–ए–अस्ली के बअ़द एक मिस्ल पर अस्र का वक़्त आ जाता है और किसी के नज़दीक मिस्लैन के बअ़द अस्र का वक़्त आता है। मुनासिब मअ़लूम होता है कि यहां मिस्ल और मिस्लैन समझा दिया जाए। खुली धूप के दिन एक फुट की सीधी लकड़ी धूप में नसब करें (गाड़ दें) जो हिस्सा गड़ा हो उस के ऊपर एक फुट हो, बारह बजने से पहले ही लकड़ी के पास बैठ कर साये के आख़िरी किनारे पर निशान लगाएं साया घटता जाएगा आप निशान लगते जाएं यहां तक कि घटना बन्द हो जाएगा और अब बढ़ने लगेगा, जिस निशान पर घटना रूका वह उस दिन का साय–ए–अस्ली है वह ज़वाल का वक़्त है और जैसे ही साया बढ़ने लगा ज़वाल का वक़्त ख़त्म हुआ ज़ुह्र का वक़्त शुरूअ़ हो गया। साय–ए–अस्ली यअ़नी ज़वाल के वक़्त का साया नाप लें अब साया बढ़ रहा है, साय–ए–अस्ली के निशान के बअ़द जिस तरफ़ को साया बढ़ रहा है उस तरफ़ एक फुट नाप कर निशान लगा दें, जब साया उस निशान पर पहुंच जाए तो एक मिस्ल हो गया। सऊदिया वालों के नज़दीक ज़ुह्र का वक़्त ख़त्म हो गया अस्र का वक़्त दाख़िल हो गया अहनाफ़ के बअ़ज़ उलमा के नज़दीक अस्र का वक़्त आ गया। उस निशान से आगे उसी जानिब फिर एक फुट नाप कर निशान लगा दें जब साया उस निशान पर पहुंचेगा यह मिस्लैन का वक़्त कहलाएगा अब अस्र का वक़्त सब के नज़दीक सहीह् होगा, पस सऊदिया वाले एक मिस्ल साया होते ही अस्र की अज़ान कह कर अस्र की नमाज़ पढ़ लेते हैं। आप जमाअ़त से नमाज़ पढ़िये और नमाज़ को सहीह् समझिये दोहराने की ज़रूरत नहीं। इसी तरह् कपड़े के मोज़ों पर मसह् हंबली हज़रात के यहां जाइज़ है पस हंबली इमाम या अहले हदीस इमाम ने नाइलान के मोज़ों पर मसह् करके नमाज़ पढ़ाई तो इमाम की नमाज़ हो गई उनके मुक्तदियों की नमाज भी हो गयी चाहे मुक्तदी हनफ़ी क्यों न हो लिहाज़ा आप सऊदिया में हंबली इमाम के पीछे नमाज़ अदा करें जमाअ़त की नमाज़ न छोड़ें आपकी नमाज़ सहीह् रहेगी साथ ही आप को उम्मत में इत्तिहाद व इत्तिफ़ाक़ काइम रखने का सवाब मिलेगा इन्शा अल्लाह तआला।

प्रश्न : एक शख़्स का बच्चा बीमार हुआ उस ने नज़्र मानी कि "बच्चा अच्छा हो जाएगा तो एक बकरा सदक़ा करूंगा।" बच्चा अच्छा हो गया बकरा आ चुका है ज़ब्ह् की तैयारी है, क्या नज़्र मानने वाला ख़ुद उस बकरे के गोश्त में से ले सकता है और खा सकता है?

उत्तर : नज़्र का बकरा पूरा का पूरा सदक़ा है, ग़रीबों मिस्कीनों का हक़ है, सारा गोश्त ख़ैरात किया जाएगा, नज़्र करने वाला ख़ुद नहीं खा सकता चाहे वह ख़ुद मिस्कीनों में से हो।

प्रश्न : आप फ़ार्सी के मुरक्कबे इज़ाफ़ी व तौसीफ़ी की ज़ेर को 'ए' की

(शेष पृष्ठ १८ पर)

ऐसा देश है मेरा

एन. साकिब अब्बासी

एक बार हिमालय की घाटी में सभी देशों को पक्षियों की बैठक हुई जिसमें हर देश के पक्षियों को अपने देश की विशेषताएं बतानी थीं। सब ने बारी बारी अपने देश की विशेषताओं को गिनाया, जब भारतीय प्रतिनिधि कोयल की बारी आई तो उसने अपने प्रिय देश की प्रशंसा कुछ इस प्रकार की।

मेरा नाम कोयल है। मेरे पूर्वजों का इतिहास भारत के इतिहास से भी अधिक प्राचीन है। मेरा कोई धर्म नहीं है फिर भी मैं अपने प्रिय ईश्वर के एकेश्वरवाद का गीत सवेरे से सांझ गाती हूं। हजारों सदियां बीत जाने पर भी आज हर लेखक व कवि मेरे नाम लिये बिना अपने गद्य व काव्य में अधूरापन का आभास करता है। परन्तु अब मैं अपनी बात न करके सारे जगत से अच्छा देश भारत की बात करती हूं। वह एक ऐसा सम्मोहन भरा देश है जहां मुस्कुराते हुए सावन के आंसू, ग्रीष्म ऋतु की लू पूस की आग लगाती छिटकी चांदनी है वहीं कुन्दनी शरीर जैसे फूली सरसों के पौधे, युवा सर उठाते खेत और आम से लदे पेड़ भी हैं। अगर एक ओर आकाश को चुम्बन देते पहाड़, गंगा के मौन किनारे और रावी व चनाब गीत गाती लहरें हैं वहीं दूसरी ओर मस्जिदों व मन्दिरों के सुकून और मदरसों व गुरूकुल की सादगी का अनोखा संगम है।

मैंने इस देश में एक लम्बा समय बिताया है जहां आज मस्जिदों का अजानों और मन्दिरों की घण्टों की सदाओं पर विहान होती है। सोते हुए गांव खेत के रास्ते जागते हैं। यहां के पर्वत पर अब भी घनघोर घटाएं छाती हैं। वहां की बरखाएं वैसे ही मनों को लुभाती हैं। वनों में आज भी पवन के शीतल झोंके आते हैं। गावों में सांझ के समय गलियों में अंधियारा होता है और सड़कों पर सायों का डेरा होता है। वर्षा ऋतु पहले ही जैसे सुहाने लगते हैं। वनों में झूलों और गीतों की गोष्ठी सजी रहती है। आम की गीली शाखाओं पर मेरी कू–कू और गौरैयों के चहचहे जारी रहते हैं। बरखा की बहारें, सावन की घटाएं सभी मनमोहनी लगती हैं।

मेरा देश त्यौहारों का देश है जहां हर दिन त्योहारों में बीतता है। कहीं दीवाली की जगमग है कहीं ईद के मेले हैं। जहां प्रेम की बंसी बजाता हर सांझ सवेरा आता है। मेरे देश की संस्कृति सुन्दर घाटियों में कलकल करते झरनों, देवदारों के बीच से जाती सुन्दर पगडंडियों और सुगन्धित पवनों में सांस लेती अल्लाह की भक्ति में डूबे व्यक्ति का रूप धारण करके मानव के हृदय को सुकून देती है।

मैं उस देश की वासी हूं जहां सुन्दर अरूणिमामय सूर्योदय, लाल, पीली और नारंगी किरनों से युक्त अस्ताचलगामी भास्कर, बसन्ती फूलों की खिलखिलाहट, मधूमास में सुगन्धित सुवासित मंजरियों से गदरायी अमराइयों, बंसवारियों की धूप छांही आंचल में विचरणशील महोरव, सघन सलोने बादलों की उमड़–घुमड़, वर्षा ऋतु में अर्धचन्द्रकार पंख शोभित मयूर की मनमोहक नृत्य भंगिमा और सतरंगे इन्द्रधनुष का आकाश में मनहर विस्तार ने हमारे देश को सारे संसार में सुन्दर बना दिया है।

मैं उस देश की रहने वाली हूं जहां पत्थरों से सर टकराते पर्वती नदियों, वर्षा ऋतु में भीगे हुए देवदारों के घनेरे वनों, नागिन के भांति बल खाती लहराती पगडंडियों और उससे आलिंगन किये हुए हरे पेड़ों के छायों, श्वास लेती जीती जागती विहानों, मनमोहक प्राकृतिक दृश्यों, सांझ को घोसलो में लौटते पंछियों की लम्बी कतारों, मस्जिदों के मिनारों और दूर कहीं किसी चरवाहे की बांसरी से निकली हुई दर्द भरी लय से गुंजी घाटियों ने हमारे प्रिय देश को लोगों के बीच ईर्ष्या और प्रेम का कारण बना दिया है।

आज जबकि सम्पूर्ण विश्व एक सा हो गया है, फिर भी मेरा प्रिय देश इस जग का सुन्दर अंग है। आज विश्व एक शाखायुक्त पेड़ के भांति है जिसमें अनगिनत डालियां हैं। हर शाखा मानों एक देश है और मेरा प्रिय देश भी इसी पेड़ की हरी भरी शाखा है। परन्तु ऐसा नहीं है कि मुझे केवल अपने देश से प्रेम है। बल्कि और शाखाओं यहां तक कि पत्तियों से भी प्रेम है। विश्व में विभिन्न संस्कृतियां उदय से अस्त का रास्ता नापती रही हैं और सबका रंग अलग–अलग है मेरे प्रिय देश का भी अपना एक रंग है, उसका ये रंग मुझे सबसे अनोखा व निराला लगता है।

●●●

आधुनिक युग में मौलाना रूम की सार्थकता

अली जहीर नकवी, दिल्ली

फारसी कवियों की आकाशगंगा में मौलाना जलालुद्दीन रूमी के विशिष्ट स्थान व ख्याति से इनकार नहीं किया जा सकता। प्रोफेसर ब्राउन ने भी मसनवी (उर्दू फारसी पद्य की एक किस्म है।) मौलाना रूम की गिन्ती फारसी अद्वितीय रचनाओं में किया है। शाहनामा फिरदौसी, चहारमकालः निजामी, गुलिस्ताने सअदी और दीवाने हाफिज प्रसिद्ध तथा लोकप्रिय रचनाएं हैं परन्तु जो ख्याति और लोकप्रियता मौलाना रूम को प्राप्त हुई है वह किसी दूसरी किताब को हासिल न हो सकी। मौलाना रूम ने अपनी अमर रचना मसनवी के द्वारा मानव जगत को खुदा की मारिफत (अध्ययात्म) उच्च मानवीय मूल्यों, खैरसगाली, इन्सान दोस्ती, मानवता और प्रेम का सन्देश दिया है। मानवता और प्रेम का सन्देश, स्थान तथा काल की सरहदों से हमेशा आजाद रहा है, यही कारण है आठ सौ साल बाद भी मौलाना की उत्कृष्टता (अजमतों) की स्वीकारोक्ति (एतराफ) विश्व–स्तर पर की जा रही है। विश्व संस्था यूनिस्को ने २००७ के वर्ष को मौलाना रूम का साल करार दिया है।

मौलाना जलालुद्दीन रूमी का जन्म ३० सितम्बर १२०७ में बलख के एक विद्वत (इल्मी) परिवार में हुआ। उनके पिता मौलाना बहाउद्दीन अपने समय के एक महान विद्वान थे मध्य ऐशिया पर मंगोलों के हमले और राजनीतिक हालात के पेशेनजर उनका खानदान बलख को छोड़ कर कौनिया में आबाद हो गया। मौलाना रूम चालीस साल तक ज्ञान की गंगा में नहाते रहे। जब मौलाना की मुलाकात अपने जमाने के पहुंचे हुए कलन्दर और उच्च कोटि के सूफी–सन्त शम्स तबरेज से हुई तो उन के जीवन में एक अजीब क्रान्ति आई उन्हीं के सान्निध्य का असर था कि मौलाना रूमी एक महान अल्लाह वाले और कवि बन गये। मौलाना की मृत्यु १२७३ में हुई। उनकी समाधि (मकबरा) कौनिया में है। इस महान विचारक और ईश–भक्त की महानता और ख्याति उनकी प्रभावशाली मस्नवी के कारण है जिसके छः खण्ड हैं और जिस में छब्बीस हजार से अधिक अशआर (शेर का बहुवचन) हैं। उनकी गजलों का संग्रह "दीवाने शम्स" के नाम से जाना जाता है। जिस में लगभग पचास हजार अशआर हैं। मौलाना की मस्नवी वास्तव में कुरआन की आरिफाना और शायराना तफसीर है जो कुरआन की आयतों और हदीसों से भरपूर है। इस मस्नवी में हर प्रकार के नैतिक किस्से उपमा और हिकायत (कथा) के जरिये बयान किये गये हैं जिन में सीख की चाश्नी है। मस्नवी में भक्ति व सूफिज्म के पेचीदा मसायल और प्रेम–कहानी का उल्लेख भी अत्यन्त सुन्दर शैली में किया गया है। यहां इश्क को अक्ल पर बरतरी हासिल है। क्योंकि मौलाना के नजदीक इश्क ही वह पायदार रिश्ता है जिस के जरिये हक तक रसाई मुम्किन है। इस प्रकार की फलस्फियाना बहसों को मस्नवी में बड़ी सरल शैली में नज्म किया गया है। मौलाना की बांसुरी जब अपनी कथा शेर में बयान करती है तो उस से एक नयी दास्ताने गम बयान होती है। अगर रूसी कवि लरमोन्तोफ को उसकी दर्दभरी (मार्मिक) आवाज में एक दुखी बाला की आवाज सुनाई देती है तो उस महान भक्त मोलवी को इस में एक दर्दमन्द आत्मा की सरगुजश्त (वर्णन) सुनाई देती है जो अपने ठिकाने से बिछड़ गयी है। वास्तव में मौलाना की बांसुरी की दास्तान बिछड़ी हुई आत्मा की आवाज है जो अपनी असल से बिछड़ गयी है और अपनी असल की तरफ जाना चाहती है।

मौलाना की दुनिया जिस को मस्नवी में बयान किया गया है आत्मा की ऐसी दुनिया है जिस की हर चीज में जिन्दगी के आसार नुमायां हैं। यहां हर चीज अपने भेद जानने वाले से बात करती है। बांसुरी कहती है मेरा दर्द न जाने कोय।

मौलाना रूम की मस्नवी हर जमाने में अवाम व खवास के हर तब्कः में लोकप्रिय रही है। और इस ने हर जमाने के ज्ञानी व इन्सान दोस्त समाज के प्रभावित किया है। सूफिज्म के महान कवि अब्दुर्रहमान जामी ने तो यहां तक कह दिया कि मस्नवी मौलाना रूम की हैसियत फ़ारसी जबान में इरफ़ाने इलाही के मुतरादिफ (पर्यायवाची) है (मस्नवीये मोलवीये मअनवी, हस्त इरफ़ां दर ज़बाने पहलवी)।

सदियां गुजर जाने के बाद भी

आज दुनिया के राष्ट्र मौलाना रूम की इन्सान दोस्ती से भरपूर तालीमात को बड़ी इज्जत व एहतराम की निगह से देखते हैं। दुनिया की अनेक भाषाओं में इस मस्नवी के अनुवाद हुए हैं। न केवल ईरान,पाकिस्तान में मस्नवी पर काम हुआ है बल्कि रूस, इन्डोनेशिया, मलाया, जर्मनी, फ्रांसीसी योरप और अमरीका में मस्नवी के अनुवाद और भावार्थ लिखे गये हैं। फ्रांसीसी भाषा में जेडी वालेन, जर्मन में फ्रेडरिक और हैनमाइक ने मस्नवी के अनुवाद किये। अंग्रेजी भाषा में सरजेम्स के अलावा निकलसन के अनुवाद काफी लोकप्रिय हुए जिन के अनेक संस्करण निकल चुके हैं। यहां तंक कि इन दिनों अमरीका में भी मौलाना रूम का बुखार अमरीकियों पर चढ़ा हुआ है।

वर्तमान युग के इस बेचैन कर देने वाले दौर में जब कि बड़ी ताकत कमजोरों पर जुल्म कर के मानवाधिकार को पामाल कर रही हैं, आज जब कि इन्सानों के जरिये इन्सानों पर जुल्म हो रहा है, ऐसी विषम परिस्थितियों में मौलाना रूम के इन्सानी पैगाम को समझने का महत्व और भी बढ़ जाता है। क्योंकि मौलाना के नजदीक हवा–हविस का दास मानव प्रकाश के स्रोत सत्य को प्राप्त नहीं कर सकता। मौलाना की नजर में परफेक्ट इन्सान वह है जिस की सूरत और सीरत दोनों में एकसानियत (अनुरूपता) हो। आज के तथा कथित साम्राजी हुक्मरानों के कौल व फेल (कथनी व करनी) में कितना विरोधाभास है। वह दिखावा में तो इन्सानियत के मसीहा बनते हैं लेकिन दूसरा रूख उनका जालिमाना किरदार है। मौलाना रूम ने जुल्म व अत्याचार के बारे में कहा है आजिजो और कमजारों पर जुल्म व अत्याचार करने वालों को यह जान लेना चाहिए कि तुम्हारे हाथों के ऊपर भी किसी का हाथ है। क्षणिक ताकत के कारण तुम ही जबर दस्त नहीं हो।

अगर अमरीका में मौलाना रूम की शिक्षाओं को सही तरीक: से समझा गया होता तो अमरीका के जरिये इन्सानी बिरादरी पर जुल्म की मौजूदा सूरते हाल (वर्तमान वस्तुस्थिति) न होती। पश्चिमी साम्राज्य ने मौलाना रूम को सही दृष्टिकोण से देखा होता तो आज इन्सानों पर इस तरह जुल्म नहीं होता। मौलाना की रचना में आलमी इन्सानी बिरादरी की समस्याओं का हल मौजूद है। शायद इसी लिये मौलाना ने सदियों पहले आलमी इन्सान बिरादरी को सम्बोधन करते हुए प्रेम का पैगाम यूं दिया था –

तू बरा–ए–वस्ल करदन आमदी
नै बरा–ए–फस्ल करदन आमदी

प्रस्तुति : एम० हसन अंसारी

(राष्ट्रीय सहारा उर्दू दैनिक २ दिसम्बर २००७ से साभार)

(पृष्ठ २३ का शेष)

जब तक मुसलमान वक्त की कद्र करते रहे वह दुनिया के सुपर पावर रहे। फिर समय ने भी मुसलमानों की गोद में बूअली सीना, अल्फाराबी, अल्बेरूनी, और इब्न तैमियां : जैसे मोती डालो। इकबाल ने इन्हीं के बारे में कहा है :

'निशाने राह दिखाते थे जो सितारों को'

इस के विपरीत जब सामग्री पालिसियों ने मुसलमानों की जिन्दगी में तन आसानी और भौतिकवाद का अफयून दाखिल कर दिया तो दुनिया की रहनुमाई करने वाली कौन की जिन्दगी का बड़ा मकसद, खाओ माल बढ़ाओ और ऐश करो" बन गया। और आज मुसलमान,

"तरस गये हैं किसी मर्दे राहदां के लिये"

इतिहास गवाह है कि जिन नेशन्स ने वक्त की कद्र की कामयाबी ने उनके कदम चूमे। जापानियों की मिसाल हम सब के सामने है। द्वितीय विश्व युद्ध में वहां महान तबाही आई। इकसे बावजूद जापानी इस साल की अल्प–विध में लगातार मेहनत और समय के बेहतरीन उपयोग की बदौलत दुनिया में उंच्च कोटि पर पहुंच गये। उनकी कामयाबी का राज यही है कि उन्होंने सदियों का सफर बरसों में तय किया।

आइये ! संकल्प करें कि हम हर पल कोई लाभदायक कार्य करेंगे। आपके पास कोई काम नहीं तो कुरआनशरीफ की तिलावत कीजिए। किसी किताब का अध्ययन करें। कोई लाभदायक बात सुनें, किसी आर्थिक अथवा आन्दोलनात्मक क्रियाक्लाप में हिस्सा लें। और अपने आज को बीते कल से बेहतर बनाने का प्रयास करें।

'वर्तमान पल' को लाभदायक बनाने के लिए प्यारे नबी सल्ल० का यह फरमान हमारे लिये मार्गदर्शन का काम करे कि अगर तुम्हारे हाथ में पौधा है और इस बीच प्रलय आ जाये, और तुम्हारे पास इतना समय है कि इसे लगा सकते हो, तब जरूर लगाओ, यह पौधा लगाने पर भी तुम्हें बदला मिलेगा।

प्रस्तुति : एम० हसन अंसारी

(उर्दू मासिक रिजवान, दिसम्बर २००७ से साभार)

समय मूल्यावन है, इसे नष्ट न करें

हमीदुल्लाह

कुछ दिनों पहले मैं अपने गांव गया। वहां शीशम की घनी छांव तले गांव के कई नवजवान टोलियों में ताश या लोडू खेलते हुए नजर आये। गांव के छोटे से बाजार में भी तकरीबन हर उम्र के लोग खुशगप्पियों में लगे थे। यह छोटे से देहात का किस्सा है। हमारे देश की ७० प्रतिशत आबादी देहाती है। और अधिकांश देहातियों की जिन्दगी इसी डगर पर गुजर रही है।

शहरों की हालत भी कुछ ऐसी ही है वहां भी चायखाने और क्लब दिन रात आबाद रहते हैं। बागात और बाजारों में बेमकसद घूमने फिरने, दिन-रात सुबह-शाम जहां चाहे वक्त गुजारने और दर बदर भटकने वाले लोगों की कोई कमी नहीं। इन्टरनेट, कैफे, और वीडियो खेलों में व्यस्त नवजवान साफ कहते हैं, "हमारा मकसद समय काटना है" यह तो उन लोगों की कहानी है जिन्हें कोई काम नहीं मिल रहा है और जिन्हें बेरोजगार कहा जाता है। तस्वीर का एक रुख और भी है सरकारी दफ्तरों और संस्थाओं में काम करने वाले मातहतों और अफसरों की "व्यस्तता" का दृश्य है। जहां आठ बजे दफ्तर खुलने चाहिए वहां दस बजे से पहले न डाक्टर मौजूद होता है न पटवारी, तहसीलदार और न किसी विभाग का जिम्मेदार समय दोस्तों के साथ गपशप, चाय पीने और टेलीविजन पर सम्पर्क करने की नजर हो जाता है।

अब वह नौकरी बेहतरीन समझी जाती है। जिस में काम कम करना पड़े और तनख्वाह अच्छी हो, तेज गाड़ी, निवास तथा अन्य सुविधायें खूब मिलें। वैसे भी हमारे यहां वेतन इस हिसाब से दिया जाता है कि जिसका काम जितना अधिक होगा उसकी तनख्वाह उतनी ही कम और सुविधायें न होने के बराबर। जहां तक राजनीतिज्ञों की बात है निजी या सरकारी आयोजनों में निश्चित समय पर पहुंचना मुख्य अतिथि के लिये तौहीन समझा जाता है। यही कारण है कि देश में कोई प्रोग्राम, योजना और कोई काम न समय पर शुरू होता है न समय पर समाप्त होता है। हम बहैसियत क़ौम समय जैसी मूल्यवान पूंजी को जिस बेपरवाही और बेदर्दी से नष्ट करते हैं वह अपनी मिसाल आप हैं। मेरे नजदीक तो हमारी दुर्दशा का सबसे बड़ा कारण यही है।

सच तो यह है कि समय जीवन है यह हर चीज को निगल कर विलुप्त कर देता है जो जीवित रहने योग्य न हो। इस के विपरीत जो समय से भरपूर फायदा उठाये वह कामयाब हो जाता है।

इतिहास के अध्ययन से यह बात सामने आती है कि न केवल महापुरुषों बल्कि नेशन्स की कामयाबी का सब से बड़ा भेद समय की कद्रदानी और प्लानिंग में निहित है। एक विद्वान डॉ. मुहम्मद यहिया लिखते हैं मैं ने किसी व्यक्ति को कामयाब होते नहीं देखा जो समय नष्ट करता है।

हजरत उमर का कथन है कि जब मुझे किसी के बारे में बताया जाता है कि वह कोई काम नहीं करता तो वह मेरी निगाहों से गिर जाता है।

स्वयं हमारे नबी सल्ल० और सहाबः की जिन्दगियां समय के बेहतरीन संयोजना की आला नमूना हैं। मुसलमान मक्का वालों की यातनायें और आजमाइशें झेलने के बाद बेसरोसामानी के आलम में मदीना पहुंचे। वहां फिर वह अपनी नई हुकूमत बेहतर बनाने के लिए संघर्ष करते रहे। उन्होंने दिलों को मांझने और शिक्षा--दीक्षा की व्यवस्था की और आर्थिक विकास और रक्षात्मक क्षमताओं की प्राप्ति के लिये व्यवहारिक उपाय किये। शैतानी शक्तियों का हर मैदान में मुकाबला किया। यूं एक साल संक्षिप्त अवधि में उन्होंने अरब से आज्ञानता (जाहिलियत) का खात्मा करके इस्लाम का झंडा लहराया और उस समय की सुपर शक्तियों को पराजित किया। थोड़े से मुसलमानों ने समय का सही इस्तेमाल कर के और स्वपनों का संसार सजा कर एक संक्षिप्त अवधि में इतने बड़े कारनामे अंजाम दिये। वास्तव में उन्होंने अपने अमल का लमहों में हिसाब करके हर पल को अपना एक स्थान दिया और रहमान के इस फरमान को अपना लक्ष्य बना लिया, "आसमानों और जमीन की रचना में और दिन-रात के आने जाने में अकलमन्दों के लिये निशानियां हैं।" (कुरआन)

(शेष पृष्ठ २२ पर)

मुसलमानों के साथ भेद–भावपूर्ण रवैयः

तरक्की में रूकावट

एम० हसन अंसारी

रोजनामा राष्ट्रीय सहारा लखनऊ १४ दिसम्बर २००७ को पृष्ठ ११ पर इस सुर्खी के तहत छपी खबर सद फीसद सही है, यह एक जमीनी हकीकत (ग्राउंड रियलिटी) है। यह हमारे लिये और विशेषकर बुद्धिजीवी वर्ग और सही सोच वालों के लिए एक चिन्तन का विषय है और यह कि इसके लिये हम क्या कर सकते हैं और क्या करें? यह एक सवाल है, और एक बड़ी देश सेवा तथा देशभक्ति है। सवाल देश की तरक्की और मुल्क की खुशहाली का है और हम सब का है। प्रत्येक भारतवासी और हम भारत के लोगों का है। किसी व्यक्ति विशेष का नहीं, किसी राजनीतिक पार्टी का नहीं, किसी जाति और सम्प्रदाय का नहीं जिस के स्वरचित घिरौंदों में हम घिर कर रह गये हैं। ग्लोबलाइजेशन के इस जमाने में यह दुरुस्त नहीं और न ही मुनासिब।

भारत के वजीर मालियात मिस्टर चिदम्बरम जो साफ सुथरी छवि वाले और सही सोच वाले मन्त्री हैं और जिनके पास मालियात जैसा महत्वपूर्ण कलमदान है जो मुल्क का बजट बनाते और पेश करते हैं, उन्होंने दिसम्बर २००७ में एक मौके पर बहुत सही कहा कि अगर राज्य प्रशासन की संस्थायें ही समाज के विभिन्न समुदायों के बीच भेद–भाव बरतते हैं तो भारत को एक मजबूत मुल्क नहीं बनाया जा सकता। उन्होंने देश की उद्योगपतियों की कान्फ्रेन्स को सम्बोधित करते हुए कहा कि देश एक जुट तभी रह सकता है जब भविष्य में भारत में सभी को हिस्सादारी का अवसर दें। हम एक स्वस्थ समाज की संरचना तब तक नहीं कर सकते जब तक कि राज्य प्रशासन की सभी संस्थायें चाक व चौबन्द होकर सभी वर्ग के लोगों के लिये भेद–भाव और जानिबदारी खत्म न करें।

श्री चिदम्बरम ने कहा कि कुछ वर्षों पूर्व भारत के एक राज्य के किसी शहर में फसाद हुआ, दुर्भाग्य से हम ने देखा कि दोपहिया गाड़ियों और कार पर सवार होकर लोग दुकानें लूटने गये। हम सभी को ऐसे कार्य से बचना चाहिए। उन्होंने कहा कि अधिकतर संस्थाओं में शुरू से ही भेद–भाव बरते जाते हैं और यदि ऊपरी सतह पर खरोंच आती है तो अवाम में भेदभाव की भावना जागृत होती है जो देश और समाज के लिये घातक है। और अगर समाज का एक बड़ा हिस्सा अपने आप को अलग–थलग महसूस करता है तो भारत एक मजबूत देश नहीं बन सकता। उन्होंने कहा कि सच्चर कमेटी ने यह नतीजा निकाला कि मुसलमान स्पष्ट तौर पर वंचित वर्ग है। और कमोबेश यही हालत दलितों तथा अनुसूचित जातियों की भी है। उन्हों आगे स्पष्ट किया कि आर्थिक विकास में तेजी लाने और स्वस्थ समाज की रचना करने में अंतर है, हम एक बड़ी अर्थ व्यवस्था बना सकते हैं लेकिन समाज के बड़े तब्के अपने आप को अलग थलग पाते हैं, उनके साथ भेद भाव का रवैया इख़्तियार किया जाता है या उन्हें नज़र अन्दाज़ किया जाता है या उनका शोषण किया जाता है तो देश के विकास में रूकावट पैदा होगी। यह एक जमीनी हकीकत है इस की अनदेखी नहीं की जा सकती।

चार पहिया गाड़ी का एक टायर भी अगर कमजोर है तो खतरा बना रहेगा और गाड़ी नार्मल रफतार से नहीं चल पायेगी। भारतीय समाज की इस विशाल नाव के किसी हिस्से में पानी भर गया और नाव डूबी तो न ऊपर के लोग बचेंगे और न नीचे अथवा मध्यम वर्ग के लोग बच जायेंगे ईश्वर हमें सद्बुद्धि वाला बना दे। और हम इन पंक्तियों के मधुर और सावधान करने वाले सन्देश के भाव को न केवल समझने वाले बल्कि स्वच्छ मन और शुद्धता के साथ निष्कपट होकर निश्छल अमल करने वाले बन जायें।

वकारे कौम गया कौम के निगहबानो,
जफा वतन पे है फर्जे वफा को पचाहनो
(चकबस्त)

मिर्ज़ा ग़ुलाम

कैसा ग़ुलाम मिर्ज़ा था
आख़िर हुआ था क्या
मर्यम बना पर्दा किया
हामिला भी वो हुआ
तहलील हो के जान लो
ख़ुद ही को फिर जना
दअ़वे हैं उस के ये तो
वो इन्सान भी न था
दुन्या में कोई ऐसा भी
सुनने में आया है
जिस ने कही ये बात
वो शैतान ही तो था

बर्स (सफेद दाग) लीकोडर्मा

यह खून की खराबी का मरज है, बासी और खराब गिजाएं खाने से यह मरज होता है। अक्सर बर्स के मरीजों में पुरानी पेचिश, पेट के कीड़े और जिगर की खराबी भी पाई जाती है। कभी आतिशक के सबब भी होता है। सफेद दाग की खाल चुटकी से पकड़ कर सूई चुभाएं तो अगर खून निकले तो इलाज हो सकता है पानी निकले तो इलाज मुशकिल है।

लीकोडर्मा के इलाज के लिय नीजोरालेन्ट टेबलेट अच्छी दवा है डाक्टर के मशवरे से इस से इलाज कराएं इसी का लोशन भी आता है जिसे लगा कर दोपहर की धूप सिंकाई की जाती है। तरकीब डाक्टर से पूछें।

(अमराज व इलाज लेखक अब्दुल जब्बार)

इस विषय पर २६.१२.०७ को उर्दू राष्ट्रीय सहारा में एक अच्छा लेख आया है अनुवाद प्रस्तुत है।

सफेद दाग रोग में जिल्द को कुदरती रंगत देने वाले मेलानिन पिगमेंट में कमी के चलते जिल्द पर सफेद रंग के निशान उभर आते हैं, खास तौर से उन लोगों में यह निशान काफी खराब नजर आते हैं जिनका रंग सांवला या काला होता है। हालांकि उससे जिस्म के किसी हिस्से को नुक्सान नही होता फिर भी उससे मुतअस्सिरा (प्रभावित) शख्स को जबरदस्त जेहनी तनाव से तो गुजरना ही पड़ता है, यह तनाव किसी बीमारी या दर्द से होने वाले तनाव से कहीं जियादा होता है। इस तरह यह हालत मेडिकल प्राबलम के साथ साथ मरीज के लिये एक समाजी परेशानी भी बन जाती है।

लीको डर्मा (बर्स) जिल्द की एक बेहद आम खराबी है, जिस से दुन्या के एक फीसदी या उससे भी जियादा लोग मुताअस्सिर हैं, फर्क सिर्फ इतना है दूसरे मुल्कों के मुकाबले भारत में इस की शिकायतें कुछ जियादा हैं। यह रोग किसी भी उम्र में किसी को भी हो सकता है चाहे वह औरत हो या मर्द, वैसे मर्दों के मुकाबले औरतों में यह मरज आम है। इस रोग से सब से जियादा मुतअस्सिर होने वाले अअजा (अंग) हैं हाथ, गर्दन पीठ और कलाई आदि।

अलामात :

लीकोडर्मा की शुरूआत एक छोटे से सफेद दाग से होती है जो आगे चल कर पैचेज का रूप धार लेते हैं। शुरूआत में इन पैचेज का रंग पीला होता है लेकिन जैसे – जैसे पिगमेंट कम होता जाता है पैचेज का रंग सफेद और जियादा सफेद होता है इन पैचेज का साइज भी बढ़ता रहता है लिहाजा उन के आपस में मिल जाने से जिस्म के किसी भी अज्व (अंग) का एक बड़ा हिस्सा सफेद हो जाता है, कुछ केसों में तो देखा गया है कि जिस्म की लगभग पूरी जिल्द ही सफेद हो जाती है।

वजह (कारण)

सफेद दाग को लेकर समाज में भांति भांति की बातें फैली हुई हैं, आम तौर पर लोगों की सोच यह है कि मछली और दूध को एक वक्त में इस्तिअमाल करने से यह मरज होता है लेकिन इसे सच नहीं कहा जा सकता इस लिये कि यह रोग उन में भी देखा जाता है जो गोश्त मछली बिल्कुल नहीं खाते, इसी तरह कद्दू दूध और प्याज दूध के एक साथ इस्तिअमाल करने से सफेद दाग रोग होने की बात भी मुम्किन नहीं है।

दरअस्ल लीको डर्मा के लिये न तो किसी किस्म के जरासीम (कीटाणु) जिम्मेदार होते हैं न ही खून की खराबी के सबब यह होता है यह रोग एक जिस्म के दूसरे जिस्म से मिलन से भी एक दूसरे में नहीं फैलता।

सफेद दाग की अहम वजुहात है जेहनी तौर पर बहुत जियादा परेशान रहना, पेट से मुतअल्लिक बीमारी, लीवर ठीक न होना, पीलिया आंतों में कीड़े, टाइफाइड, पसीना निकलने के अमल में गड़बड़ी आना और जलने की वजह से हुआ जख्म वगैरह जीन्स भी इस की एक अहम वजह हैं।

लीको डर्मा से मुतअस्सिर ३० फीसद लोगों के लिये जीन्स (पैतृक) जिम्मेदार होते हैं।

इलाज :

लीकोडर्मा के कुदरती इलाज के लिये सबसे पहले जो जरूरी काम है वह है सिस्टम को क्लीन करना ताकि इस में जमा जहरीला पन दूर हो सके।

इससे जिस्म में हेलिंग पावर खुद ब खुद बेहतर बनती है और जिस्म में आई गड़बड़ीयों को दूर कर के उसे मअमूल पर लाती है, शुरूआत में इस के मरीज को एक हफ्ता फास्ट रखना पड़ता है, इस बीच उसे ताजा फल और सब्जियों के जूस में बराबर मिकदार में पानी मिलाकर हर दो या तीन घन्टा पर सुब्ह ८ बजे से रात ८ बजे तक लेना होता है, साथ ही आंतों को भी साफ रखना जरूरी होता है, आंतों की सफाई के लिये रोजाना सुब्ह को गर्म पानी का एनीमा लेना चाहिए।

एक हफ्ता जूस लेने के पश्चात मुतअस्सिर (प्रभावित) शख्स को ताजा फल, कच्ची या फिर स्टेमड सब्जियां और छिल्केदार अनाज की बनी ब्रेड ही दें। कुछ दिन के बअद दूध या दही का इस्तिअमाल भी किया जा सकता है इस के बअद मरीज को मुतवाजिन (सन्तुलित) गिजा देना शुरूअ करें, मुतवाजिन गिजा में बीज फल, अनाज और सब्जियां दें, लेकिन ध्यान रखें कि खाने में जियादा तर हरी सब्जियां और फल ही हों, बीज और बीन्स भी दे सकते हैं। साथ ही कोल्ड प्रेसिड वेजीटेबिल आयल, शहद और खमीर का भी इस्तिअमाल किया जा सकता है, दो महीने का गैप रख कर ऊपर की विधि से जूस फास्टिंग बार-बार करते रहें।

लेखकों से अनुरोध है कि वह पन्ने के एक ओर खुला-खुला, सरल तथा लाभदायक लेख लिखें।

[redacted]

करें।

३. बिजली का प्रयोग आवश्यकतानुसार ही करें। बिना जरूरत बिजली की चीजों को खुला न रखें।

४. वृक्षारोपण से ग्रीन हाउस गैस में कमी आती है। क्योंकि पेड़ कार्बन डाईआक्साइट सोखते हैं।

५. बोतल, डिब्बे, प्लास्टिक थैलियां, अखबार आदि को दोबारा प्रयोग के लायक बनायें कि इससे कूड़ा करकट वाली जगहों में कमी आती है जहां से मिथीन नामक ग्रीन हाउस गैस निकलती है।

६. आज कल बाजार में नवीनीकरण वाली चीजें मिलती हैं जिन के पैकेट पर एक दायरे में पूरा कर के तीन तीरों का निशान होता है, यह वस्तुएं उन से तैयार की जाती हैं जो इससे पूर्व प्रयोग में आ चुकी हैं, अतः इन के बनाने में कम ऊर्जा खत्म होती है।

७. ऐसी चीजों का प्रयोग करें जिन को चलाने में ऊर्जा कम खर्च होती है, ऐसी चीजों पर इनर्जी स्टार लेबल होता है। ८. प्रोफेसर पाल क्रुटजन जिन्हें ओजोन पर्त में सूराख पर काम करने के लिए १९९५ में नोबेल इनाम से सम्मानित किया गया है उन्होंने ग्लोबल वार्मिंग के प्रभाव को कम करने के लिए यह सलाह दी है कि ऊपर वायुमण्डल में सल्फर के कण सल्फर डाई आक्साइड छोड़े जायें जो सूर्य की किरणों को प्रत्यावर्तित करेंग जिस से तापक्रम वायुमण्डल में वापस चला जावेगा।

अगर हमें अपने भविष्य की चिन्ता है तो ग्लोबल वार्मिंग पर काबू पाना ही होगा, अन्यथा यह दुनिया तबाह हो जायेगी। इस लिये जरूरी है कि हम अपने अपने स्तर से इस निवारण का प्रयास करें और बच्चों को स्कूलों में इस बाबत तालीम दी जाये ताकि वह एक जिम्मेदार समझदार इन्सान बन सकें।

राष्ट्रीय सहारा उर्दू दैनिक १६ दिसम्बर २००७ से साभार

प्रस्तुति : एम०हसन अन्सारी

[redacted]

आपकी दूसरी बीवी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बेटी रुकैया थीं। २ हिजरी में उनकी वफात (मृत्यु) के बाद आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दूसरी बेटी उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हा से निकाह किया, जिनकी मौत ९ हिजरी में हुई, आपकी कोई औलाद न हुई। उसके बाद आपके निकाह में यह औरतें आईं। ३ फाख्ता बिन्त गज्वान। ४. उम्मे अम्र बिन्त जुन्दुब। ५. फातिमा बिन्त वलीद। ६. उम्मुल बनीन बिन्त उयैयना। ७. रम्ला बिन्त शैबा। ८. नाइला बिन्त कराकिसा।

औलाद लड़के— १. हजरत रुकैया से एक लड़का अब्दुल्लाह पैदा हुआ था जो बचपन में ही मर गया था। २. फाख्ता बिन्त गज्वान से भी एक लड़का अब्दुलाह था वह भी बचपन में मर गया था। ३. उम्मे अम्र से चार लड़के — अम्र, उमर, खालिद और अबान हुए। अबान बहुत बड़े हदीस के आलिम थे। जिन्होंने उमवी हुकूमत में भी बड़ी तरक्की की। ४. फातिमा बिन्त वलीद से वली और सईद। ५. उम्मुल बनीन से एक लड़का अब्दुल मलिक पैदा हुआ।

लड़कियां —मरयम, उम्मेउस्मान, आइशा, उम्मेअबान, उम्मे अम्र, उम्मेखालिद, अरवा आदि।

ग्लोबल वार्मिंग के कारण और उसके प्रभाव

डॉ० उबैदुर्रहमान
पूसा इंस्टीट्यूट, नई दिल्ली

पर्यावरण व्यवस्था में परिवर्तन आज दुनिया में चर्चा का विषय बना हुआ है। सन् १८६० और २००० के बीच धरती और समुद्र के विश्व तापक्रम में ०.७५ डिग्री सेलसियत अर्थात १.३५ फारेन हाइट की वृद्धि हो चुकी है, निकट भविष्य में इस में कमी आने के आसार नहीं लगते। बहुत मुमकिन है कि अगले कुछ वर्षों बाद पैदा होने वाला बच्चा यह न जान पायेगा कि ध्रुवीय रीछ (पोलर बियर) क्या है या पेंग्विन (एक समुद्री पक्षी) किसे कहते हैं? धरती के नक्शे से सुन्दरवन या माल्दीप गायब हो चुका होगा। उसके जमाने का चेन्नई मेरीना बीच (समुद्री तट) से वंचित हो चुका होगा। हिन्दुस्तान के हवाले से बात करें तो इन्डियन इन्स्टीट्यूट आफ ट्रापिकल मेटोयोरोलाजी (प्ज्ड०) के अनुसारा गत सौ वर्षों में भारत का तापक्रम ०.५ फारेनहाइट बढ़ चुका है। और यह वृद्धि पिछले २० से ३० वर्षों में अधिक हुई है। ऐसा समझा जाता है कि इक्कीसवीं सदी की समाप्ति तक तापक्रम में ३ फारेनहाइट तक वृद्धि हो जायेगी और जाड़े में सर्दी नाममात्र पड़ेगी।

बदलते हुए पर्यावरण से स्थानों की विशेष तायें भी प्रभावित हो रही हैं मसलन कशमीर में एक मौसम सोंथ कहलाता था जो अब गायब हो चुका है। दार्जिलिंग जहां का अधिकतम तापक्रम १४ फारेनहाइट हुआ करता था वहां अब २८ फारेन हाइट को छू रहा है। इसी प्रकार हिमालय की घाटी में पाया जाने वाला पिन्थोरीम नाम का पौधा जो १२२०मीटर पर मिलता था अब वह उत्तर में २२८५ मीटर की ऊंचाई पर पाया जा रहा है। योरोप में पौधों की कई किस्में ऐसी रिकार्ड की गई हैं जिन में पहले की बनिस्बत फूल एक हफतः पहले खिलने लगे हैं। और पतझड़ का समय लगभग एक हफतः आगे बढ़ गया है। अनेक पक्षियों और मेंढकों की नस्लों में पहले की बनिस्बत बच्चे ज़ल्दी पैदा होने लगे हैं। तितलियों की ३५ से अधिक किस्मों ने अपना ठिकाना साढ़े तीन किलोमीटर से २४० किमी तक उत्तर में बना लिया है।

१९६० की दहाई गत १५० वर्षों में सब से अधिक गर्म थी जब कि १९९८ और २००५ को सब से अधिक गर्म वर्षों के तौर पर रिकार्ड किया गया है। आर्कटिक क्लाइमेट इम्पैक्ट असेसमेंट (।ब्।) की रिपोर्ट के अनुसार अलास्का पश्चिमी कैनाडा और पूर्वी रूस का औसत तापक्रम पिछले ५० वर्षों के दौरान चार से सात फारेनहाइट बढ़ गया है।

उत्तरी ध्रुव पर मौजूद बर्फ पर तापक्रम में वृद्धि नोट की गयी है। १९७८ के बाद यहां प्रति दशक नौ प्रतिशत की कमी आई है। इसी सदी की समाप्ति तक उत्तरी ध्रुव के तापक्रम में सात से नौ फ० की वृद्धि की सम्भावना है। गर्मी के मौसम में वहां बर्फ पूरी तरह पिघल जायेगी।

ग्लेशियर बर्फ की चादर है जो मीठे पानी का भण्डार है। दुनिया के बड़े ग्लेशियर्स पिघल रहे हैं। अमेरिका का मोन्टाना नेशनल पार्क १९१० में स्थापित हुआ था, उस समय वहां १५० ग्लेशियर्स थे जिन में से अब सिर्फ ३० ही बचे हैं। तन्जानियां में माउन्ट किली मिंजारो की बुर्फ की पर्त १९१२ से अब तक ८० प्रतिशत कम हो चुकी है और डर है कि २०२० तक शायद यह पूरी तरह समाप्त हो जाये। जब ग्लेशियर पिघलते हैं तो उन से पानी समुद्रों में प्रवेश करता है और उनके तल को ऊंचा करता है। चीन के ६८१ से अधिक मौसम स्टेशनों पर वैज्ञानिकों के पठार, जिसे दुनिया की छत के नाम से जाना जाता है, वहां ग्लेशियर के पिघलने से चिन्ता बढ़ गयी है। चीन के कुल ग्लेशियरों का ४७ प्रतिशत इसी पठार में है जो वार्षिक ७ प्रतिशत की दर से पिघल रहा है। इस का नतीजा सूखा, धूल भरी आंधियों और रेगिस्तानों में वृद्धि के रूप में जाहिर हो रहा है। तिब्बत मौसम ब्यूरो के अनुसार १९६० के बाद के तिब्बत में औसत तापक्रम दो डिग्री फ० बढ़ चुका है। ग्लेशियर्स का तेज रफतार से पिघलना दुनिया की कई बड़ी नदियों को खतरनाक बना देगा। मिट्टी का कटाव बढ़ेगा जिससे रेगिस्तानी इलाके बढ़ेंगे। चीन में ३० करोड़ लोग ग्लेशियर के पानी पर निर्भर करते हैं। और ग्लेशियरों को खत्म होने का असर ध्रुवीय क्षेत्र के रीछ, तेंदुए, और पेंगविन की नस्लों पर भी पड़ रहा है। पेंगविन की सत्तर किस्मों में से दस पर आफत आ चुकी

है और यह समाप्ति के करीब पहुंच चुकी हैं। ग्लेशियर्स के पिघलने से पहले तो बाढ़ आयेगी, फिर नदियां सूख जायेंगी क्योंकि जब ग्लेशियर्स ही बाकी न रहेंगे तो पानी कहां से आयेगा? गंगा बुरी तरह प्रभावित होगी और इसका उपजाऊ इलाका बंजर हो जायेगा।

पर्यावरण के परिवर्तन ने पिछली सदी के दौरान समुद्रों के तल में औसतन चार से आठ इंच की बढ़ोत्तरी की है। इसी नदी में यह बढ़ोत्तरी तीन फिट तक पहुंच सकती है। वास्तव में समुद्रों का गर्म तापक्रम पानी के तल को बढ़ा रहा है। क्योंकि ताप से पानी फैलता है और जब समुद्र फैलते हैं तो जगह भी ज्यादा घेरते हैं। समुद्र तट वाले इलाके इससे बहुत प्रभावित होंगे। समुद्र तल में डेढ़ फिट की बढ़ोत्तरी समुद्र तट को पचास फिट आगे बढ़ा देगी और इतनी ही जमीन समुद्र में डूब जायेगी। हमारे देश में कमोबेश (लगभग) छः करोड़ लोग जो समुद्रतट पर बसते हैं इस से प्रभावित होंगे। आशंका व्यक्त की जा रही है कि इस सदी में मुम्बई पूरी तरह पानी में डूब जायेगी। यही स्थिति कोलकाता, मोरीशस और सिंगापुर आदि के लिये भी पैदा हो सकती है।

ग्लोबल वार्मिंग के कारण और हमारी जिम्मेदारियां

तापमान क्यों बढ़ रहा है? यह मौसमी परिवर्तन क्यों हो रहा है? इस सिलसिले में अमरीका की एक साइंसी रिपोर्ट यह कहती है कि इन्सान कारवाइयों से मौसमी परिवर्तन घटित हो रहे हैं। फेडरल क्लाइमेट चेंज नामी साइंसी प्रोग्राम के अनुसार पिछले पचास वर्षों से घटित होने वाले मौसमी और पर्यावरणीय परिवर्तन का रूझान सिर्फ कुदरती अमल का नतीजा नहीं। ब्रिटेन के मौसमयाती इन्स्टीट्यूट के पीटर थोरन के अनुसार धरती की जलवायु पर इन्सानी कारवाइयों का स्पष्ट प्रभाव पड़ा है।

ग्रीन हाउस गैस

ग्रीन हाउस असर का पता जासेफ फोरियर ने १८२४ में लगाया था। ग्रीन हाउस गैसें सूरज से ऊर्जा खींचती हैं। इन गैसों के न होने पर ऊर्जा वायुमण्डल में वापस चली जायेगी जिस से धर्ती के औसत तापक्रम को ६० फारेनहाइट तक सर्द कर सकता है। वास्तव में कोई भी गैस जो वायुमण्डल में इन्फ्रारेड रैडियेशन को सोख लेती है ग्रीन हाउस कहलाती है। इन्फ्रारेड रैडियेशन इलेक्ट्रो मैगनेटिक रेडियेशन है जिस की किरणों की लम्बाई प्रकाश से थोड़ी अधिक होती है।

जमीन पर ग्रीन हाउस गैसों में पानी के कण ३६ से० ७० प्रतिशत ग्रीन हाउस असर को बढ़ा सकते हैं जिसमें बादल शामिल नहीं है। कार्बन डाईआक्साइट ६ से २६ प्रतिशत मिथीन ४ से ६ प्रतिशत और ओजोन ३ से ७ प्रतिशत तक ग्रीन हाउस असर में बढ़ोत्तरी का कारण बनते हैं। १७५० के बाद कार्बनडाईआक्साइड और मिथीन के वायुमण्डलीय प्रदूषण में क्रमशः ३१ प्रतिशत और १४६ प्रतिशत की वृद्धि हो चुका है।

यद्यपि यह बात अविश्वसनीय लगती है कि इन्सान जमीन के मौसम में तबदीली ला सकता है। मगर साइंस दानों का विचार हे कि जमीन पर इन्सानी अमल से वायुमण्डल में ग्रीन हाउस गैसों में वृद्धि हो रही है। जिस से हमारी दुनिया गर्म होती जा रही है। दरअसल जब भी हम टीवी खोलते हैं, एयरकन्डीशनर्स इस्तेमाल करते हैं, बिजली जलाते हैं, कार में सवारी करते हैं, वीडियोगेम से मनोरंजन करते हैं, स्टीरियो सुनते हैं वाशिंग मशीन, डिशवाशर या माइक्रोवेव का प्रयोग करते हैं तो ग्रीन हाउस गैस को वायुमण्डल में भेजने का कारण बनते हैं।

हम जो कूड़ा करकट फेंकते हैं उन से मिथीन नाम की ग्रीन हाउस गैस निकलती है। मिथीन गैस उन जानवरों से भी पैदा होती है जो दूध और मांस की गरज से पाले जाते हैं। इनके अलावा जमीन से कोयला की खुदाई में भी मिथिली निकलती है। इन तमाम बातों को ध्यान में रखते हुए यह बहुत जरूरी है कि हम वायुमण्डल में ग्रीन हाउस गैसों की मात्रा में कमी लाने का प्रयास करें।

१. बिजली या कार का इस्तेमाल आज की जरूरत है। इससे बचा नहीं जा सकता। मगर इस के मुनासिब इस्तेमाल पर ध्यान दिया जाना चाहिए। जैसे कार पूलिंग की आदत डालना चाहिए अर्थात एक ही दफतर या करीब के दफतरों में काम करने वाले लोगों का निवास अगर आस पास है तो बजाय इस के कि हर आदमी अपनी अपनी कार से दफतर जाये चारपांच लोग कारका संयुक्त प्रयोग कर सकते हैं।

२. पर्यावरण के प्रति जानकारी जरूरी है। इस हवाले से किताबें मौजूद हैं जिन का अध्ययन करना चाहिए। अपने घर वालों तथा मित्रों से ग्लोबल वार्मिंग की समस्या पर चर्चा करें और जानकारी का आपस में आदान प्रदान

(शेष पृष्ठ २६ पर)

सैलानी की डायरी

एम०हसन अंसारी

५ दिसम्बर २००७ : डाक्टर अपनी क्लीनिक में हैं। मरीज इन्तेजार में **Appratus Boil** हो रहे हैं। कम्पाउंडर आज छुट्टी पर है। डाक्टर एक दम से बाहर निकलते हैं और मरीजों से यह कहते हुए गाड़ी पर सवार होते हैं कि अब्बा को घर से लेकर अभी आया। डाक्टर के वालिद की उम्र खासी है। एक सौ तीन साल। मगर होश व हवाश बिल्कुल दुरुस्त। आज के जवान इतने सलीकःमन्द कहां। डाक्टर वालिद को लेकर आते हैं। और क्लीनिक के सामने धूप में उन्हें उनकी चारपाई तक सहारा देकर लाया जाता है। पूरे एहतमाम के साथ वह चारपाई नशीन होकर, साथ में लाये गये दो झोलों में से अपनी जरूरत की चीजों का जायजः लेते हैं। एक में से रूमाल, तौलिया, टोपी, जानमाज आदि दूसरे में बिस्कुट, टाफी, वगैरः तकिया, पंखा, जानमाज कायदे से चारपाई पर बड़े इतमीनान से अपनी मुकर्ररः जगह पर रखते हैं। एक झोले से दो पन्नी की थैलियां निकालते हैं – एक में एक से पांच रूपये तक के सिक्के हैं। दूसरे में पांच से सौ तक के नोट। जरूरत पड़ने पर चिल्लर व चेंज की फिक्र से बेफिक्र डाक्टर अपनी क्लीनिक में मसरूफ। कोई पन्द्रह मिनट गुजरे होंगे कि खबर आई अब्बा की तबियत खराब है। डाक्टर भागे। चारपाई तो खाली है। अब्बा कहां गये। बगल की दुकान पर बिस्कुट वगैरह लेकर उसे स्टोर करने गये थे। इस लिए कि जब वह दोपहर बाद घर जायेंगे तो बच्चों में यह चीजें तकसीम करके खुश होंगे, यह उनकी हाबी है और उनके शतायु होने का राज। खुशी बांटने से उन्हें जो आत्मसन्तोष उम्र को बढ़ाने वाली है। और कर्म की यह गठरी साथ जाने वाली है। डाक्टर बिस्कुट की दुकान पर पहुंचे तो बाप को बेंच पर लेटा हुआ पाया। मरीज वह भी सौ साल पूरा कर चुका बाप। १०३ साल उम्र। डाक्टर के चेहरे पर न घबराहट न निराशा। पंखा लेकर खुद झलने लगे। चन्द मिनट में बूढ़ा बाप उठ कर बैठ गया सहारे के साथ अपनी आसन पर आकर चारपाईनशीन। डाक्टर क्लीनिक में वापस। मुबारक है ऐसे बाप काा साया और धन्य हैं ऐसा बेटा।

दिसम्बर १४, २००७ : उर्दू दैनिक राष्ट्रीय सहारा, लखनऊ के पृष्ठ ११ पर आज एक खबर की सुर्खी है "और जब आदमी ने कुत्ते को काटा।" कहा जाता है कि पत्रकारिता की दुनिया में कोई बात खबर तब बनती है जब आम डगर से हटकर कोई वारदात घटित होती है, अर्थात–कुत्ता जब आदमी को काटता है तो इसे खबर के दायरे में नहीं रखा जा सकता, लेकिन जब आदमी कुत्ता को काटे तब यह बात न्यूज बन जायेगी। पत्रकारिता की दुनिया में सनसनी पैदा करने वाली सुर्खियों का अपना बड़ा महत्व है और इसके लिये शब्दों के गोरखधन्धों की होड़ लगी रहती है पर उन्हें उस स्तर से नीचे नहीं जाने दिया जाता जहां भाषण और साहित्य की सेन्सेशन पर बली चढ़ा दी जाती है। इस से साहित्य का स्तर गिरता है। जब कोई बात लीक से हटकर की जाती है तो वह लोगों का ध्यान अनायास आकर्षित कर लेती है। ऐसी चीज हमारे मनोरंजन का साधन तो बन सकती है परन्तु इसकी उपादेयता कोई खास नहीं होती। आज ही के अखबार की एक सुर्खी और पढ़ें "चूहे अब बिल्ली से नहीं डरेंगे "इसी अख्बार के ६ दिसम्बर के अंक की एक सुर्खी हैं "हाजियों की स्मगलिंग" और पांच दिसम्बर के पहले पेज की सुर्खी है "जूतों पर वेट की शरह कम नहीं होगी।" या हमारे पाठक हिन्दी दैनिक जागरण लखनऊ नगर संस्करण ५ दिसम्बर २००७ के पृष्ठ एक की सुर्खी पढ़ लें। यह सब देखकर सैलानी के मन में आया–एक सवाल उठा–मीडिया के बहाव में हमारी सभ्यता और संस्कृति कहां जा रही है? और इनकी हमारी भावी पीढ़ी पर क्या छाप बन रही है? ऐसा तो नही है कि हम पश्चिम की आंख बन्द कर के नकल करने में अपनी 'पूरब' की थाती को घाटा पहुंचा रहे हैं ?

इख्लास

इख़्लास की दौलत भी
बड़ी दौलत है जहां में
पाता है क़ल्ब इससे सुकूं
दोनो जहां में

जो काम करो अल्लाह को राज़ी करने के लिए करो।

इस्लाम की नैतिक शिक्षाएं

अल्लामा सैयद सुलैमान नदवी

इस्लाम की हर चीज चाहे वह अकीदा (आस्था) से सम्बन्ध रखती हो या इबादत या अखलाक व लेन देन से सम्बन्धि रखती हो उसमें सबसे महत्वपूर्ण वस्तु अल्लाह तआला की खुशी है। हर वह काम अच्छा है जिसे अल्लाह तआला पसन्द करता है और वह काम बुरा है जिसे अल्लाह तआला नापसन्द करता है। यद्यपि यह अलग बात है कि जिस कार्य को वह पसन्द करता है वह अक्ल व बुद्धि की कसौटी पर भी खरा उतरता है और उसमें पब्लिक का फाइदा भी होता है और जिसको वह नापसन्द करता वह चीज अक्ल की कसौटी पर भी खरी नहीं उतरी है और उसमें अल्लाह के बन्दों का नुकसान भी होता है। इसी कारण इस्लाम की दृष्टि में अखलाक की यह दो किस्में (प्रकार) हैं।

१. वह काम जिन्हें अल्लाह तआला पसन्द करता है फजाइल (अच्छाइयां) कहलाते हैं। २. वह कार्य जिन्हें वह नापसन्द करता है उन्हें रजाइल (बुराइयां) कहते हैं।

यह फजाइल बहुत हैं कुरआन और हदीस के पृष्ठ इनसे भरे पड़े हैं। हम इनको एक एक विशेष क्रम से लिखते हैं जिससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि इस्लाम के निकट किस खूबी और विशेषता को कौन सा स्थान प्राप्त है।

अल्लाह तआला फरमाता है "ईमानवाले कामयाब हो गए जो अपनी नमाज में खुशूअ़ (विनम्रता) अपनाते हैं जो व्यर्थ वार्ता से मुंह फेर लेते हैं। जो जकात देते हैं और अपनी शर्मगाहों (गुप्तांगों) की हिफाजत करते हैं। सिवाय अपनी बीवियों और दासियों के उन पर कोई आरोप नहीं। तो जो इनके अतिरिक्त को चाहे तो वही लोग सीमा को पार करने वाले हैं। और वह अपनी अमानतो (धरोहर)और वादों का ध्यान रखते हैं और जो अपनी नमाजों की हिफाजत करते हैं। यही हैं असली वारिस जो फिरदौस (जन्नत) के वारिस होंगे और वह उसमें हमेशा रहेंगे। (अल–मोमिनूनः १–११)

इन आयतों में जिन नैतिक कार्यों का जिक्र आया है वह यह है।

१. बेकार बातों से बचना

२. पाकदामनी (संयम)

३. अमानदारी व वाअदे को पूरा करना

एक दूसरी जगह है "और लेकिन असली नेकी उसकी है जो अल्लाह पर और आखिरत (परलोक) और फरिश्तों पर और (अल्लाह का) किताबों पर और पैगम्बरों (सन्देशवाहकों) पर ईमान लाया और अपना माल उस से महब्बत के बावजूद (रिश्तेदारों को अनाथों को साथ को यात्रियों को और मांगनेवालों को और गर्दनों को छुड़ाने अर्थात गुलाम के आजाद करने में दे और नमाज स्थापित की और जकात दी और अपने कथन को जब कि उसका उन्होंने वादा कर लिया पूरा करने वाले, और मुसीबत व तकलीफ में और लड़ाई के हल चल के समय जमे रहने वाले हैं। (सूरः बकरः आयत नं. १७७) नदवी

इन आयतों में जो फजाइल (महान कार्य) गिनाए गए हैं वह यह हैं

१. दानता (२) वअदे पूरा करना (३) और मुश्किल समय में (हक पर) जमे रहना।

सूरः आले इमरान में है "धैर्य वाले, सच बोलने वाले और अल्लाह के हुक्म का आज्ञा पालन करने वाले और अल्लाह के रास्ते में खर्च करने वाले। (आयत : १७)

इस आयत में धैर्यता, सच, और दानता की प्रशंसा की गई है।

इसी सूरः में उन नेक बन्दों का हाल भी है जो अल्लाह की माफी और जमीन व आसमान के बराबर की जन्नता के हकदार होंगे।

"जो खुशहाल और दरिद्रता दोनों स्थितियों में (अल्लाह को खुश करने के लिए) खर्च करते हैं और क्रोध को रोकते हैं। और लोगों को माफ करते हैं और अल्लाह नेकी करने वाले को दोस्त रखता है। (आले इमरान : १३४)

ऊपर की आयत में १. दानता २. माफी व क्षमा ३. और अच्छे ढंग से काम करने वालों की तअरीफ की गई है।

सूरः मआ़रिज में है वह जिनके माल में मांगने वाले और मुसीबत के मारों का हिस्सा निर्धारित है और जो कियामत के दिन को सच मानते हैं और अपने पालनहार के अज़ाब (दण्ड) से डरते हैं। निःसन्देह उनके रब का

अजाब निडर होने की चीज नहीं, और जो अपनी शर्मगाहों की हिफाजत करते हैं मगर अपनी पत्नियों और दासियों के कि उन में उन पर कोई आरोप नहीं। जो इनके अलावा चाहे वह सीमा के पार करने वाले हैं। और जो अपनी अमानतों और अपने वाइदे का ध्यान रखते हैं और जो अपनी गवाहियों पर डटे रहते है। (आयतः २४–३३)

इन आयतों में १. दानता २. पाकदामनी (संयम) ३. अमानतदारी ४. वाइदे को पूरा करना ५. सच्ची गवाही को एक मुसलमान का उन खूबियों में गिना गयां जो उसे जन्नत में ले जाने का कारण बनेंगी।

सूरः अहजाब में उन पुरूषों व स्त्रियों का जिक्र है जिनके लिए अल्लाह तआला ने अपनी नेअमतों (कृपा) और बड़ी मजदूरी का वाइदा किया है। "और सच बोलने वाले और सच बोलने वालियां सब्र (धैर्य) करने वाले और सब्र करने वालियां और आजिज़ी (नम्रता) करने वाले और आजिजी करने वालियां और सदकः देने वाले और सदकः देने वालियां और रोजा रखने वाले और रोजा रखने वालियां और अपने शर्मगाहों (गुप्तरोगों) की हिफाजत करने वाले और हिफाजत करने वालियां। (आयतः ३५)

इन आयतों में १. सच्चाई २. सब्र (धैर्य) ३. आजिज़ी (विनय) ४. पाकदामनी (संयम) की खूबियों व अच्छाइयों का वर्णन है।

सूरः फुर्कान में अल्लाह के अच्छे बन्दों का पहचान यह बताई गई है १. और रहम वाले अल्लाह के बन्दे व हैं जो जमीन के हल्के चलते हैं और जाहिल जब उनसे जहालत की बातें करे तो वह सलाम कहें। (आयत – ६३)

२. और जब वह खर्च करें तो न फुजूल खर्ची करें और न तंगी करें बल्कि बीच का रास्ता हो। (आयत नं. ६७)

३. और जो नाहक किसी बेगुनाही की जान नहीं लेते और न ज़िना (व्यभिचार) करते हैं। (आयत : ६८)

४. और जो झूठी गवाही नहीं देते और जब बेहूदा कार्यों के पास गुजरे तो शरीफों की तरह गुजर जाते हैं। (आयत : ७२)

पहली आयत में नम्रता व झुकाव २. हिल्म (सहनशीलता) दूसरी आयत में एतिदाल (सन्तुलन)

और तीसरी आयत में अत्याचार न करना और पाकदामनी (संयम) और चौथी आयत में सच्चाई और संजीदगी (गम्भीरता) की तअरीफ की गई है।

सूरः रअद में वह विशेषताएं बताई गई हैं जो क्रियामत में काम आएंगी।

लोग अल्लाह के वाइदे को पूरा करते हैं और कौल (वचन) को तोड़ते नहीं हैं और जिसके जोड़ने को अल्लाह ने कहा है उसको जोड़े रखते हैं और अपने मालिक से डरते हैं और बुरी तरह हिसाब लेने से सहमे रहते हैं और जिन्होंने अपनी पालनहार को खुश करने के लिए सब्र किया और नमाज़ खड़ी की और हमने जो कुछ उनको दिया उससे छिपे और खुले (अच्छे काम में) खर्च किया और बुराई को भलाई से दूर करते हैं उन्हीं के लिए कियामत का घर (जन्नत) है। (रअद : २०–२२)

इस वाइदे को पूरा करने से वह काइदा भी समझा जा सकता है जो बन्दा अपने अल्लाह से करता है और उससे वह वाइदा भी समझा जा सकता है जो अल्लाह का नाम लेकर बन्दे दूसरे बन्दे से करते हैं और जिसके जोड़ने का हुक्म मिला है वह रिश्तदारों के हुकूक व अधिकार हैं। उनके दो को छोड़ कर इन आयतों में उनकी तअरीफ की गई है जो बुराई के बदले लोगों से भलाई करते हैं या यह कि भलाई से बुराई को धो देते हैं।

"उस कियामत के घर को हम उनके लिए (खास) करेंगे जो जमीन में घमण्ड व उपद्रव करना नही चाहते और आखिर में अन्जाम (फल) परहेजगारों के लिए है।

"और जो बड़े गुनाहों और बेशर्मी की बातों से बचते हैं और जब उन्हें गुस्सा आता है तो माफ कर देते हैं। (शूर आयत नं : ३७)

अर्थात गुस्सा आने पर भी बेकाबू नहीं होते और माफ कर देते हैं। इन्सान न्याय के लिए इससे बढ़कर क्या कहा जाए कि वह अल्लाह के प्यार व महब्बत को प्राप्त करने का माध्यम है।

अब हम फजाइल को एक क्रम से विस्तार के साथ लिखेंगे।

अनुवाद : इरफान फारूकी नदवी

अखलाक

तलवार से झुकता है दुशमन
दोस्ती करता नहीं
अख़लाक़ की तासीर से
करता है गहरी दोस्ती
इस्लाम के अख़लाक़ की
तुम को अगर है जुस्तजू
देख लो क़ुर्आन में
लिखा है इदफ़अ् बिल्लती।
(४१:३४ देखिये)

हिन्दी लिपि में उर्दू शब्दों का उच्चारण

इदारा

नोट : बिन्दी वाले अक्षरों के उच्चारण स्थान उर्दू वालों से सीखना आवश्यक है

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अबा	इन्कार	इज्तिहाद	चेष्ठा	इख़्तराअ़	आविष्कार
अबदीयत	हमेश्गी – सातस्य	अजदाद	पुर्खा लोग	इख़्तिलाफ़	मतभेद
इब्रीक़	लोटा	अजराम	सित्तारे आदि	इख़्तियार	घटना, अधिकार
अब्सार	आंख	अजसाद	शरीर (बहुवचन)	इख़राज	निष्कासन
इब्ताल	झूटा करना	अजसाम	शरीर (बहुवचन)	इख़राजात	व्यय
अबआ़द	दूरियां	अजनबीयत	परिचित न होना	इख़्लास	निःस्वार्थता
अबआ़दे सलासः	लम्बाई, चौड़ाई,ऊंचाई	इहातः	घेरा, घिरा स्थान	उख़रवी	पारिलौकिक
अब्यज़	उजला	अहबाब	मित्रजन	अख़लाक़	आचरण
अतालीक़	गुरू	एहतिजाज	विरोध प्रकाशन	उख़ूवत	बन्धुत्व
इत्तिहाद	मिलाप, एकता	एहतिराज़	बचना	अदा	छबि, चुक्ता
इत्तिबाअ़	अनुकरण	एहतिराक़	जलना	इदारत	सम्पादन
इत्तिफ़ाक़	मेल जोल, अचानक	एहतिराम	सम्मान	इदारा	संस्था
इत्लाफ़	बरबादी	एहतिलाम	स्वप्नदोष	इदारियः	सम्पादकीय
इस्बात	प्रमाणीकरण	एहतियाज	आवश्यकता	इदबार	पतन
इस्नाअशरी	शीआ़ इमामीया	एहतियात	बचाव, सावधानी	अदबीयत	साहित्यिक छवि
इजाबत	पेट की एक आंत स्वीकृति	एहराम	वर्जित कर लेना (हज वस्त्र)	इदख़ाल	दाख़िल करना
इजारह	किराया	एहसान	उपकार	इदराक	पाना, बुद्धि
इज्तिमाअ़	सम्मेलन	एहसास	अनुभूति, आभास	अदयान	धर्म (बहु वचन)
इज्तिमाईयत	सामाजिकता	एह्या	जीवित करना	अज़ीयत	दुख, कष्ट

पाठक जिस उर्दू शब्द का उच्चरण जानना चाहेंगे अर्थ सहित छापा जाएगा।

ज़िक्रे मीलादुन्नबी

सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम

अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों पर जितना करम फ़रमाते हैं, जितनी शफ़क़त फ़रमाते है, जितना रह्म फ़रमाते है उतना कोई दूसरा नहीं कर सकता, आपने ख़ुद फ़रमा दिया मेरी रह्मत हर चीज़ को घेरे हुए है। (७:१५६) आपने ख़ुद एअ़लान फ़रमा दिया : "मुझे पुकारो मैं जवाब दूंगा।" (४०:६०) और अपने महबूब सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहलवा दिया कि "जो अल्लाह से नहीं मांगता अल्लाह उस पर नाराज़ होते हैं।"(हदीस) और रब ने अपने करम से इस ख़दशे और शुब्हे को भी दूर फ़रमा दिया कि हर बन्दे की आवाज़ रब तक पहुंचेगी या नहीं और साफ़ एअ़लान फ़रमा दिया "मैं क़रीब हूं।" (२:१८६) और बड़ी शफ़क़त से फ़रमाया "हम तो तुम्हारी गरदन की रग से भी क़रीब हैं। (५०:१६)

उसी करम वाले आक़ा ने अपने अह़काम और अपना पैग़ाम अपने बन्दों तक पहुंचाने के लिए नुबुव्वत व रिसालत का सिलसिला जारी फरमाया, हमारे जद्दे अम्जद दादा आदम अ़लैहिस्सलाम सब से पहले इन्सान भी हैं और अल्लाह के नबी भी हैं। ह़ज़रत आदम अलैहिस्सलाम की पैदाइश उस तरह नहीं हुई जिस तरह किसी इन्सान की पैदाइश अपनी मां के रह़िम से होती है। अल्लाह तआ़ला ने मिट्टी (के जौहर) से दादा का पुतला तैयार करके उसमें रूह फूंक दी फिर उन के जिस्म को ह़ुस्न व जमाल से आरास्ता कर दिया, फिर अपनी क़ुदरत से उन की पसली से एक औ़रत निकाल दी और ह़ज़रत आदम (अ़०) से उन को व्याह दिया वही दादी ह़व्वा हैं। दोनों दादा दादी जन्नत में रहते थे, दोनों में बड़ी महब्बत थी दोनों को बेहतरीन जन्नती लिबास मिला हुआ था। जब अल्लाह को मंज़ूर हुआ कि इन्सानों के दादा ददी दुन्या में आएं तो उसके अस्बाब पैदा हुए और वह दुन्या में आए, फिर जब अल्लाह को मंजूर हुआ तो उन में औलाद का सिलसिला शुरूअ़ हुआ और ख़ूब औलाद हुई, यह इस तरह़ हुआ कि जब अल्लाह तआ़ला ने आ़लमे बाला में फ़िरिश्तों के बीच दादा आदम को बनाकर उनमें रूह फूंकी तो उन में उनकी बड़ाई ज़ाहिर करने के लिए सभी फिरिश्तों को सजदा करने का हुक्म हुआ। सभी फ़िरिश्तों ने उन को सज्दा किया लेकिन उन के बीच एक जिन्न अ़ज़ाज़ील नाम भी था उसने घमण्ड में सज्दा न किया जब रब ने पूछा कि सजदा क्यों न किया तो कहने लगा मैं आग से यह मिट्टी से मैं इन से अफ़ज़ल हूं।

इस नाफ़रमानी पर वह जन्नत से निकाल दिया गया उसने दादा आदम (अ़०) की औलाद से बदला लेने की क़सम खाई और इस काम के लिए अल्लाह तआ़ला से क़ियामत तक की छूट मांगी, अल्लाह तआ़ला को अपने बन्दों का इम्तिह़ान लेना था उस को छूट दे दी इस तरह़ वह और उसकी औलाद आदम (अ़०) की आलौद को राह से भटकाने पर लगी हुई हैं और क़ियामत तक लगी रहेगी लेकिन अल्लाह पर ईमान रखने वाले और उस पर भरोसा करने वाले ख़ास बन्दों पर इब्लीस और उसकी औलाद का क़ाबू न चल सकेगा।

अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों की रहनुमाई और शैतानों (इब्लीस और उसकी औलाद) से बचाने के लिये नुबुव्वत व रिसालत का सिलसिला चलाया और हर ज़माने में और हर इलाक़े में अपने नबियों और रसूलों को भेजता रहा। जिन की गिन्ती अल्लाह ही को मअ़लूम है उनमें से कुछ बड़े यह हैं जैसे ह़जरत नूह़ अ़लैहिस्सलाम, ह़ज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम, ह़ज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ह़ज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम, ह़ज़रतईसा अ़लैहिस्सलाम और सबसे आख़िर में तमाम नबियों और रसूलों के सरदार ह़ज़रत मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहिव सल्लम को सारे आ़लम के लिए और क़ियामत तक के लिए नबी व रसूल बना कर भेजा।

ह़ज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को अल्लाह तआ़ला ने अपनी क़ुदरत से बिन मां बाप के पैदा किया था, ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम को बिना बाप के पैदा किया बाक़ी सारे नबियों और रसूलों को मां बाप से पैदा किया आख़िरी नबी ह़ज़रत मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को भी मां बाप से पैदा किया। आप के वालिद साहिब का नाम अ़ब्दुल्लाह था और मां का नाम आमिना

था। मशहूर क़ौल के मुताबिक़ आप १२ रबीउ़लअव्वल पीर के दिन सुब्ह के वक़्त इस दुन्या में तशरीफ़ लाए लाखों दुरूद और लाखों सलाम हों आप पर।

पैदाइश से पहले ही वालिद साहिब मुहतरम की वफ़ात हो चुकी थी इस लिए आप यतीम (अनाथ) थे। आप को सारे आ़लम का उस्ताद बनना था इस लिए मख़लूक़ में किसी को आप का उस्ताद नहीं बनाया गया।

आप का उस्ताद तो सिर्फ़ अल्लाह है। आपने लिखना पढ़ना नहीं सीखा आप का लक़ब उम्मी है। ४० वर्ष की उ़म्र से आप पर वह्य (ईश वाणी) आने लगी, जब भी वह्य आती तो लिखवा देते, २३ वर्षों तक वह्य जारी रही, वह्य में अल्लाह का कलाम उतरता था अल्लाह तआ़ला के अह्काम उतरते थे, वह्य उतरने केसाथ तब्लीग़े रिसालत का सिलसिला भी जारी रहा, यहां तक कि आयत उतरी : "अल्योम अक्मल्तु लकुम दीनकुम व अत्मम्तु अ़लैकुम निअ़मती व रज़ीतु लकुमुल् इस्लाम दीना" और मैंने तुम्हारे लिये तुम्हारा दीन मुकम्मल कर दिया और अपनी निअ़मत तुम पर पूरी कर दी और तुम्हारे लिये दीने इस्लाम को पसन्द कर लिया। (५:३)

क़ुर्आने मजीद दीन इस्लाम ही बताने के लिये उतर रहा था जब दीने इस्लाम पूरा हुआ क़ुर्आने मजीद भी पूरा हो गया। सह़ाब–ए–किराम (रज़ि०) ने एक तरफ़ क़ुर्आने मजीद को अपने सीनों में भी और लिख कर भी मह़फ़ूज़ कर लिया, तो दूसरी जानिब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अह़ादीस जो क़ुर्आने मजीद की अ़मली तफ़सीर हैं उन को भी मह़फ़ूज़ कर लिया जिन्हें बअ़द में किताबी शक्ल में मह़फ़ूज़ कर लिया गया।

इसी क़ुर्आने मजीद से पता चला कि हमारे नबी (स०) के दादाओं में ह़ज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह ने हमारे नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के लिये इस तरह़ दुआ की थी।"ऐ अल्लाह इन में (यअ़नी) हमारी औलाद में इन ही में से एक रसूल भेज जो इन पर तेरी आयतें पढ़े और इन को किताब व ह़िक्मत सिखाए और इन को पाक करे बेशक आप ज़बरदस्त ह़िक्मत वाले हैं (२:१२९)

अल्लाह को यह करना ही था दुआ क़बूल हुई अपने मह़बूब नबी (सल्ल०) को पैदा फ़रमा कर मबऊ़स फ़रमा दिया और फ़रमाया : "अल्लाह ने ईमान वालों पर इह़सान किया कि उन में उन ही में से एक रसूल भेजा जो उन पर अल्लाह की आयतें पढ़ते हैं और उनको पाक करते हैं और उन को किताब व ह़िकमत सिखाते हैं। (३:१६४) और फ़रमाया : तुम्हारे पास तुम ही में से एक ऐसा रसूल आया जिस पर तुम्हारी तक्लीफ़ गारां गुज़रती है वह तुम्हारी हिदायत के ह़रीस रहते हैं और ईमान वालों पर बड़े शफ़ीक़ और मेहरबान हैं। (९:१२८) सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम,अल्लाह ने अपने नबी को ह़ुक्म दिया कि आप फ़रमा दीजिए कि अगर तुम अल्लाह से मह़ब्बत रखते हो तो मेरा इत्तिबाअ़ करो (अर्थात मेरा अनुकरण करो) फिर तो अल्लाह तुम से खुद मह़ब्बत करने लगेगा और तुम्हारे गुनाह भी मुआ़फ़ कर देगा वह तो ग़फ़ूर है रह़ीम है। (३:३१) फ़रमाया जिस ने रसूल की इताअ़त की उस ने अल्लाह की इताअ़त की (४:८०) फ़रमाया : वह तो अपने नफ़्स की ख़्वाहिश से बात भी नहीं करते, उन की बात तो बस वह्य होती है। (५३:३) रब ने अपने ह़बीब को क्या क्या दरजात अ़ता किये, फ़रमाया : आप तो अअ़ला अख़लाक़ वाले हैं। (६८:४) आप की ख़ातिर हम ने आप का ज़िक्र बुलन्द किया। (९४:४) हम ने तो आप को तमाम आ़लम के लिये रह़मत बना कर भेजा है। (२१:५६) सल्लल्लाहु अ़लैहि व अ़ला आलिही व अस्ह़ाबिही व सल्लम तस्लीमन कसीरन कसीरा। आप से फ़रमाय कि मैं आप को इतना दूंगा कि आप राज़ी हो जाएंगे। (९३:५) फ़रमाया : आप को हम ने कौसर अ़ता किया। (१०८:१)

आप को आप का रब एक रात मस्जिदे ह़राम से मस्जिदे अक़्सा ले गया। (१७:१) यअ़नी मक्का मुकर्रमा से बैतुल मुक़द्दस फिर वहां आप को अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम का इमाम बना कर नमाज पढ़वाई, फिर आप का रब बुराक़ सवारी पर ह़ज़रते जिब्रील के साथ आसमानों पर ले गया फिर उस मक़ाम तक पहुंचाया जहां जिब्रीले अमीन भी नहीं जा सकते थे वहां आपके रब ने अपने बहुत क़रीब कर लिया बराह रास्त हम कलामी का शरफ़ बख़्शा, बअ़ज़ जहन्नमियों और बअ़ज़ जन्नतियों का अंजाम दिखाया उम्मत के लिए पांच वक़्त की नमाज़ों का तुह़फ़ा मिला, ग़रज़ कि मेअ़राज का यह ज़मीन से आसमान तक का लम्बा सफ़र अ़जाइबात व तफ़सीलात के साथ रात ही रात पूरा हुआ और आप फ़ज्र से पहले अपने बिस्त्रे मुबारक पर तशरीफ़ ले आए। सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम।

अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को बे शुमार

मुअ़जिज़े अ़ता फ़रमाए उनमें सबसे बड़ा मुअ़जिज़ा क़ुर्आने मजीद है कि उस की एक आयत की तरह़ की आयत भी दुन्या वाले न बना सके न बना सकेंगे। दूसरा बड़ा मुअ़जिज़ा मिअ़राज का है जिस का थोड़ा बयान ऊपर हुआ। आप ने अपनी अंगुश्ते मुबारक से इशारा किया तो चान्द के दो टुकड़े हो गये, फिर दोनों टुकड़े मिल गये। आप के फ़िराक़ में खजुर का खम्बा बच्चों की तरह़ रोया जिसे सह़ाबा ने सुना। फिर आप के हाथ रख देने से चुप हो गया। आप के लुआ़बे मुबारक और दुआ़ की बरकत से ह़ज़रत जाबिर के घर चन्द आदमियों का खाना हज़ार लोगों ने पेट भर खाया फिर भी बच रहा। आपने थोड़े पानी में हाथ डाल दिया तो आपकी उंगलियों से पानी उबलने लगा यहां तक कि चौदह या पन्द्रह सौ ने पिया और वुज़ू किया दरख़्तों और पत्थरों से आप पर सलाम पढ़ने की आवाज सुनी गई, आप के इशारे पर कंकरियों ने कल्मा पढ़ा, गोह ने अ़रबी ज़बान में आप की रिसालत की गवाही दी।

ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) के तोशदान की थोड़ी सी खजूरों पर आप ने बरकत की दुआ़ फ़रमाई तो ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) २५ सालों तक उस में से खाते खिलाते रहे लेकिन अफ़सोस *अल्लाह की मस्लह़त* ह़जरत उ़स्मान (रज़ि०) की शहादत के रोज़ ह़ज़रत अबू हुरैरा का यह तोशादान कहीं गिर गया। यही ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) बयान फ़रमाते हैं कि अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा भूखे थे, ह़ुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के घर में एक प्याला दूध था ह़ुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) के ज़रीअ़े अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा को बुला भेजा वह आ गये, ह़ुक्म हुआ कि हर एक इस प्याले से पैट भर भर के दूध पिये, सब ने सेर हो हो कर पिया आख़िर में अबू हुरैरा को दूध पीने का ह़ुक्म हुआ आप ने पेट भर कर पिया ह़ुक्म हुआ और पियो, और पिया, ह़ुक्म हुआ और पियो, अबू हुरैरा ने क़सम खा कर कहा कि पेट भर गया है अब और न पी सकूंगा, अब तक प्याला पुर था जिसे आपने नोश फ़रमाया यह हमारे ह़ुजूर का मुअ़जिज़ा था सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम।

कितना मज़बूत हो गया था उनका ईमान जिन्होंने अपनी आंखों से यह मुअ़जिज़ात देखे और कितने खुश नसीब हैं अल्लाह के वह बन्दे जो बिना देखे इन मुअ़जिज़ात पर और ख़ातिमुल अंबिया के बताए हुए सारे मुग़ीबात पर ईमान लाए और आप से वालिहाना मह़ब्बत रखते हैं और कहते हैं :

वो हैं खैरुल बशर वो हैं खैरुल अनाम

उन पे लाखों दुरूद उन पे लाखों सलाम।

(पृष्ठ ३६ का शेष)

रहीम और रोटी का इशारा करता है और तीसरा दीप, धर्म और दिल को सामने लाता है और चौथा वतन नस्ल और विचार का हुक्म देता है।

जुल्फेयार के उलझाव से मुल्क को बचाना चाहते हो और फिर इसी नागन के पेचोखम में उलझे जाते हो। प्यारे दिलदार यह इलेक्शन हैजा और ताउन और इन्फलोइंजा से भी ज्यादा डरावनी वबा है। यह हम सब को आपस में टकरा टकरा कर मार डालेगा। कब्ल इस के कि हम इस गलतफहमी से आजाद हों, कि आजादी का बस यही एक रास्ता है।

मैं कम इल्म हूं और जिस इल्म से इलेक्शन बाजी पैदा हुई है उस को तो जानता ही नहीं। एक अनजान आदमी जिस तरह सोचता होगा उसी तरह में सोच रहा हूं और इस सारे सोच विचार से बस यही एक हर्फ सामने आता है कि कांग्रेस और लीग की यह सब बातें बीमार को और ज्यादा बीमार करने वाली हैं। फिर तुम जैसा मसीहा किधर जा रहा है? तुम तो एक खालिस हिन्दुस्तानी सड़क बनाते जो रेलों और मोटरों की सड़क से निराली सड़क होती ओर जिस पर किसी की रेल और किसी की मोटर न आ सकती।

अप्रैल की पहली को यह लोग दूसरों को बेवकूफ बनाया करते हैं और अब हम को आजादी भी अप्रैल की पहली को देने का जिक्र करते हैं। तो क्या हम फूल बनायें जायेंगे?

मनमोहन तुम में शरीर की सुन्दरता है, और मन का सलोनपन भी और विचार का तेज भी है और तुम कर्मरूप में महावीर हो। इस प्रेम पत्र को ध्यान कर के पढ़ लो तो मेरा तुम्हारा अल्लाह तुमको वह सीधा रास्ता बता देगा जो हिन्दुस्तान की नजात का असली रास्ता होगा।

तुम्हारे दिल के मनोहर बोल सुनने की चाहत रखने वाला हसन निजामी

प्रस्तुति : एम० हसन अंसारी

१६ जनवरी २००८

यकीं मुहकम अमल पैहम
मह़ब्बत फ़ातिह़े आ़लम
जिहादे ज़िन्दगानी में
हैं ये मर्दों की शमशीरें

ख़्वाजा ह़सन निज़ामी का अदबी ख़त

कांग्रेस सदर पंडित जवाहर लाल नेहरू के नाम

(सालनामा मुनादी, देहली १९३७ से उद्धरित और उर्दू दैनिक
राष्ट्रीय सहारा लखनऊ १४ जनवरी २००८ में प्रकाशित)

अल्लाहाबाद के दिलदार! दिल का सलाम लो और फिर यह पयाम सुनो, कि तुम भी दिले दिल्ली वाले हो। नहर सआदत खां देहली के पास तुम्हारे बुजुर्ग रहते थे, इसलिए नेहरू कहलाते हों। मेरे बड़े भी साढ़े छः सौ बरस से दिल्ली में रहते आये हैं। इस वास्ते मुझे हमवतनी और हमशहरी होने का जजबा जुरअत दिलाता है कि भाइयों और आपस में मुहब्बत का रिश्ता रखने वालों की तरह तुम को मुखातब करूं।

तुम हिन्दुस्तान के दिलों पर हुकूमत करते हो, क्योंकि तुम्हारे दिल पर खुलूस (निष्ठा) और बेतअस्सुबी (निष्पक्षता) और सच्चाई और बेगरजी हुकूमत करती है। तुम्हारे महकूम दिलों में एक मेरा दिल भी है।

तुम अल्लाहाबाद में पैदा हुए। अल्लाह तुम्हारे बोल को हमेशा बाला और आबाद रखेगा। तुम मजाहिब की असल रूह के साथ चल रहे हो जिस का दूसरा नाम बेगरज खिदमते खल्क है। इस लिये अपने मन की बिरह और लगन और सोज को इस खत के चुपचाप मगर बोलते हुए हर्फों में तुम्हारे पाक और बेबाक दिल के सामने पेश करता हूं इस खत में कोई चाल नहीं हैं जिस की आजकल सारी दुनिया में वबा (महामारी) फैली हुई है। इसमें कोई तबलीगी हिकमत भी नहीं है। क्योंकि हिन्दुस्तान और हिन्दुस्तान वालों और हिन्दुस्तान की हुकूमत को देखते देखते मेरी सारी तबलीगी हिकमतें बिरह की आग में जल कर खाक हो चुकी हैं।

इस खत में अपने मजहब या अपनी कौम या फिरकः की तरफदारी भी नहीं है। इस खत में गैर मुस्लिम कौमों से चाहे वह हाकिम हों या महकूम, नफरत और दुशमनी भी नहीं है। और इस खत में नमूद व नुमाइश की कोई जाती ख्वाहिश भी नहीं है। और इस खत को खल्कुल्लाह में आम करने की वजह भी महज यह है कि शायद और कोई हिन्दुस्तानी भी मेरे इस दर्दे दिल में शरीक हो जाये जिस के तकाजे ने मुझ से यह खत लिखवाया है। क्योंकि इस खत की तहरीर के वक्त मुझे ऐसा महसूस होता है कि इस ख्याल में मेरा कोई भी साथी नहीं है, न हिन्दू न मुसलमान न ईसाई न कोई और। रात है बहुत सुनसान ढल रही है। तीन बज चुके हैं। सारी दुनिया सोती है। मैं लिख रहा हूं और सिवाय काटने वाले मच्छरों और घंटे के खटके के किसी को अपना शरीके हाल नहीं पाता। ख्यालात और तसव्वुरात बहुत हैं मगर इन नातवानियों को देखता हूं तो इन की अकसरियत भी अकलियत से बदतर मालूम होती है।

मुझे बहुत कुछ कहना है लेकिन दिल कहता है कि अल्लाहाबाद का दिलदार पहले ही से सब कुछ जानता है। जानी पहचानी, समझी समझाई बातों को दुहराना बेकार है। एक हरफे बस है। एक अल्लाह के नामपर आबाद शहरी को बस एक ही बात लिखनी काफी है, और वह यह है कि हिन्दुस्तानियों को दुख भरी कैद से नजात दिलाने की कामना और चाहत रखने वाला उन आजारों से दुख भरी बेड़ियां काटनी चाहता है जो खुद पैदा करने वालों ही ने ईजाद किये हैं, जिन के साथ आपस की दुश्मनी और खुदगरजी चिमटी हुई है। और जिन्होंने दुनिया भर के आजादों को जाती गुलाम बना रखा है।

जब एक ही हर्फ कहना है और पाक व बेबाक होकर कहना है तो में गोल मोल क्यों कहूं, साफ साफ क्यों न कहूं कि यह कांग्रेस और यह मुस्लिम लीग और यह इलेक्शन बाजी सब दुख बढ़ाने ओर मुकैयद (बन्दी) रखने के सामान हैं। इन से सूबा, सूबा से शहर शहर से कौम, कौम से, घर, घर से, बाप बेटे से, बेटा बाप से जुदा हो रहा है, यहा तक कि हिन्दुस्तानी अपनी असली जरूरतों और सच्ची ख्वाहिशों से भी जुदा हो रहे हैं।

तुम अंग्रेजी में रूसी बोलते हो। हिन्दी जबान में उर्दू बोला करो जिसका पहला हर्फ अल्लाह ओम, और आदमियत की याद दिलाता है। और दूसरा राम

(शेष पृष्ठ ३५ पर)

हज़रत उस्मान (रज़ि०) के अख़लाक व व्यवहार

इरफान फ़ारूक़ी नदवी

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु स्वभाव के बड़े नेक और नम्र थे। आपने कभी न इस्लाम के पहले न बाद में शराब पी और न ही ज़िना किया।

अल्लाह का डर :

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु अल्लाह के डर से रोते रहते थे। मौत, कब्र और क़ियामत का ख्याल हमेशा आप को लगा रहता। सामने से किसी का जनाज़ा निकलता तो खड़े हो जाते और आपके आंसू बहने लगते।आप जब कब्रों के पास से गुजरते तो इतना रोते कि आपकी दाढ़ी भीग जाती। लोगों ने पूछा आप दोजख और जन्नत की बातों पर इतना नहीं रोते कब्र पर इतना क्यों रोते हैं? तो आपने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि कब्र आखिरत की सबसे पहली मंजिल है अगर यह मामला आसानी से निपट गया तो फिर सभी मंजिलें आसान होंगी। अगर इसमें मुश्किल हुई तो सभी मंजिलें मुश्किल होंगी।

कियामत में अल्लाह की पकड़ से इतना डरते थे कि फरमाते अगर मुझे यह न पता हो कि मैं जन्नत जाऊंगा या जहन्नम तो मैं इसका फैसला होने के मुकाबले में धूल बन जाना पसन्द करूंगा।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत करना –

आप रजियल्लाहु अन्हु हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बड़ी महब्बत करते थे। आपकी जिन्दगी की तंगी व परेशानी देखकर तड़प जाते थे। इस लिए जब आप को मौका मिलता तो उपहार देते थे। एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को चार दिन तक फाका (उपवास) करना पड़ा। हजरत उस्मान को पता चला तो आंखों से आंसू निकल आए। उसी समय बहुत सा खाने पीने का सामान और ३०० दिरहम भेंट किए।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अदब और इज़्ज़त करना –

आप रज़ियल्लाह अन्हु हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत के साथ–साथ आपका बहुत अदब भी करते थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने जिस हाथ से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथ पर बैअत की थी, उस हाथ से गन्दगी या गन्दगी की जगह को पूरी ज़िन्दगी न छुआ। जब आप खलीफा हुए और रमज़ान का वजीफा देना शुरू किया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवियों का वजीफा दोगुना रखा। हजरत उमर ने हजरत हफ्सा के शौहर के शहीद हो जाने के बाद हजरत उस्मान से अपनी बेटी की शादी के लिए कहा लेकिन हजरत उस्मान ने स्वीकार न किया। क्यों कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन से शादी का इरादा रखते थे और हजरत उस्मान को इस बात का पता था इसी तरह हुदैबिया के मौके पर जब कुरैश से बात चीत करने के लिए मक्का गए तो कुछ लोगों ने कहा तुम चाहो तो तवाफ कर सकते हो। हजरत उस्मान ने तवाफ न किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मक्का में प्रवेश करने पर प्रतिबन्ध हो और वह तवाफ करें यह कैसे हो सकता है। जब मदीना मे बागियों ने आपको घेर लिया तो हजरत मुआविया ने आपको मशवरा दिया कि मदीना छोड़कर आप शाम चलें, या कम से कम वह आपकी हिफाजत के लिए फौज की एक टुकड़ी मदीना में भेज दें। लेकिन आपने इस सोच से कि मदीना वालों को फौज से तकलीफ होगी, और आपको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पड़ोस को छोड़ना पड़ेगा, आपने पसन्द न किया।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुक्म का अदब करना –

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से महब्बत करने का मतलब ही यह है कि आपकी हर बात से महब्बत की जाए। हजरत उस्मान से बागी यह चाह रहे थे कि आप इस्तीफा दे दें, आप इस्तीफा दे सकते थे और आपकी जान भी बच सकती थी। लेकिन आपने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुक्म के कारण जान दे दी लेकिन इस्तीफा नहीं दिया। आपसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया

था कि उस्मान उम्मीद है कि अल्लाह तआला तुम्हें एक कुर्ता पहनाएगा अगर मुनाफिकीन तुमसे वह कुर्ता उतरवाना चाहें तो न उतारना यहां तक कि तुम मुझ से आ मिलो।

सुन्नत पर अमल करना –

जो आदमी जिससे महब्बत करता है उसकी हर अदा उसे प्यारी होती है, और उसकी नकल उतारना चाहता है और अगर कोई पास हो तो जता देता है कि मैं ऐसा क्यों कर रहा हूं। एक बार हजरत उस्मान मस्जिद में वुजू के लिए बैठे थे कि हुमरान पानी लाए । हजरत उस्मान ने अच्छी तरह वुजूर किया जब आप अच्छी तरह वुजू कर चुके तो फरमाया : मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इसी चौकी पर बैठ कर अच्छी तरह वुजू करते हुए देखा है। एक बार आपके सामने जनाजा निकला तो खड़े हो गए और फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी ऐसा ही किया करते थे।

एक बार मस्जिद के दरवाजे पर बैठकर बकरी का पटठा मंगवा कर खाया और नया वुजू न किया और नमाज को खड़े हो गए। फिर फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी इसी जगह पर बैठकर खाया था और इसी तरह किया था।

एक बार हज में आप मुज्दलफा में ठहरे हुए थे। फज्र की नमाज के बाद रोशनी फैल चुकी थी। अब्दुल्लाह बिन मसऊद ने कहा अगर अमीरुल मोमिनीन इस वक्त मिना के लिए चल दें तो यह सुन्नत तरीका होगा। हजरत उस्मान रजियल्लाहु अन्हु यह सुनते ही तेजी से चल पड़े। एक सहाबी कहते हैं कि मुझे पता नहीं कि अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजियल्लाहु अन्हु की बात पहले खत्म हुई या हजरत उस्मान रजियल्लाहु अन्हु पहले चल पड़े।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कभी मस्जिद में लेटते तो पांव पर पांव रख कर लेटते। हजरत सईद बिन मुसय्यब कहते हैं कि हजरत उमर व उस्मान भी इसी तरह मस्जिद में लेटते थे।

एक बार आप वुजू करने के बाद मुस्कुराए, लोगों ने मुस्कुराने का कारण पूछा तो आपने फरमाया कि एक बार मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को वुजू के बाद मुस्कुराते हुए देखा था।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आपसे महब्बत करना–

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी आपसे बहुत महब्बत करते थे। हजरत अबू सईद खुदरी रजियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैंने एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आसमान की तरफ हाथ उठाए हुए देखा, आप यह दुआ कर रहे थे ऐ अल्लाह ! मैं उस्मान से खुश हूं तो भी उनसे खुश रह।

हजरत जाबिर कहते हैं कि एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हजरत उस्मान को गले लगाया और फरमाया – "उस्मान तुम दुनिया में भी मेरे वली (साथी) हो और आखिरत में भी।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस विशेष सम्बन्ध के कारण अपनी बेटी हजरत रुकय्या रजियल्लाहु अन्हा की शादी आपसे कर दी थी। लेकिन जल्दी ही आप से यह दौलत छिन गई। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आपसे पूछा उस्मान क्या हाल चाल है। आप रजियल्लाहु अन्हु ने कहा इससे बड़ी क्या मुसीबत हो सकती है कि आपसे मेरा रिश्ता टूट गया है। यह सुनकर आपने उनसे दूसरी बेटी की शादी कर दी।

एक बार हजरत उस्मान ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास खबीसा–जो अरबों की फेवरिट डिश है – भेजा । आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आसमान की तरफ हाथ उठाकर फरमाया – ऐ अल्लाह ! उस्मान तुझे खुश करना चाहता है आप उनसे खुश हो जाइए।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हजरत उस्मान रजियल्लाहु अन्हु से इतनी ज्यादा मुहब्बत करते थे कि अगर कोई आपसे कपट रखता था तो उसकी नमाज जनाजा तक न पढ़ते थे। एक बार एक सहाबी का जनाजा आया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जनाजा की नमाज पढ़ने से इन्कार कर दिया। पूछने पर बताया कि यह आदमी उस्मान से कीना कपट रखता है इसलिए मैंने उसकी नमाज जनाजा न पढ़ी।

हया

हजरत उस्मान रजियल्लाहु अन्हु बड़े हया व शर्मवाले थे। यही वजह है कि एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बैठे थे और आपकी रान खुली हुई थी। हजरत अबूबक्र आए फिर हजरत उमर आए आप इसी तरह बैठे रहे लेकिन हजरत उस्मान आए तो आपने जांघ को ढांप लिया। लोगों ने इसकी वजह पूछी तो

आप ने फरमाया – क्या में ऐसे आदमी से शर्म न करूं जिससे फरिश्ते भी शर्म करते हैं। (बाद में किसी के सामने रान खोलना मना हो गया)

हजरत उस्मान रजियल्लाहु अन्हु अकेले बन्द कमरे में भी नंगे न होते थे। बुनाना हजरत उस्मान रजियल्लाहु अन्हु की एक दासी थी, वह कहती है जब आप नहा चुकते तो मैं उनके कपड़े ले जाती, तो आप मुझ से फरमाते मेरे जिस्म की तरफ न देखना यह तुम्हारे लिये जाइज नहीं।

सादगी

आपके घर में बीसों दास दासियां थीं। लेकिन आप अपना काम आप कर लेते और किसी को तकलीफ न देते थे। रात को तहज्जुद की नमाज के लिए उठते और कोई जग न रहा होता तो आप किसी को न जगाते। खुद पानी लेकर वुजू कर लेते। किसी ने कहा आप किसी गुलाम से क्यों नहीं काम लेते? फरमाया रात का वक्त उनके आराम के लिए है।

हसन बसरी कहते हैं कि एक बार मैंने हजरत उस्मान को देखा कि मस्जिद में अपनी चादर का तकिया बनाए सो रहे थे। इस हाल में दो भिश्ती लड़ते हुए आ गए तो आपने वहीं उनका फैसला कर दिया।

दिल की नर्मी –

आप दिल के बड़े नर्म थे जब किसी कब्र पर खड़े होते तो इतना रोते कि दाढ़ी भीग जाती थी।

हिल्म (बर्दाश्त)

अगर आप से कोई सख्ती से बात करता तो आप उसको बर्दाश्त कर जाते थे। एक बार आप से हजरत अम्र बिन आस से बातचीत हो रही थी। उन्होंने बात ही बात आपके पिता को बुरा भला कहा आपने फरमाया – इस्लाम में जमान–ए–जाहिलियत का क्या जिक्र।

एक बार आप जुमा के दिन मिम्बर पर खुत्बा दे रहे थे किसी कोने से आवाज आई। उस्मान तौबा कर और अपनी नाइंसाफी से रूक जा। हजरत उस्मान उसी वक्त कअबः की तरफ मुड़े और हाथ उठाकर फरमाया : ऐ अल्लाह। मैं पहला तौबा करने वाला हूं जो तुझसे तौबा कर रहा हूं।

कुर्बानी

आप ने मुसलमानों के माल से वजीफा में एक दाना भी न लिया। हजरत उमर रजियल्लाहु अन्हु की वार्षिक तनख्वाह ५ हजार दिरहम थी। इस तरह आपने ६० हजार दिरहम से ज्यादा मुसलमानों के बैतुलमाल में छोड़ दिए।

फय्याजी – (दानता)

आप बहुत बड़े दानी व्यक्ति थे। इस्लाम के लिए जो कुछ आपने खर्च किया वह आप पढ़ ही चुके हैं। हजरत उस्मान हर दिन लोगों को दावत करते उन्हें तो अच्छा खाना खिलाते थे और आप सिर्का या जैतून के तेल से खा लेते थे।

आपकी निजी जिन्दगी

घर – हजरत उस्मान जब मदीना हिजरत करके आए तो तो औस बिन साबित रजियल्लाहु अन्हु के दीनी भाई बने। और उनके घर में बहुत दिनों तक रहते रहे। आपने मस्जिदे नबवी के निकट एक महल बनवाया था। यह महल पूरे मदीना में अनोखा था। यह जगह आज भी सय्यदना उस्मान के नाम से मशहूर है।

व्यवसाय : आप का पेशा व्यापार था। अरब में आप से बड़ा कोई व्यापारी न था। इसलिए आपको गनी (मालदार) की उपाधि मिली थी।

जागीर–

खैबर में आपको एक जागीर मिली थी। इसके साथ आपने बहुत सी जमीनें खरीदीं थीं। बकीअ के करीब भी आपकी बड़ी लम्बी चौड़ी जमीन थी, जिसे आपने कब्रिस्तान के लिए वक्फ कर दिया था।

खाना –

आप बूढ़े हो गये थे इसलिए मुलायम और हल्का खाना खाते थे।

सफाई –

आप जब से मुसलमान हुए थे। हर दिन नहाते थे। हमेशा अच्छे कपडे पहनते थे और इत्र लगाते थे।

कपड़ा –

आप ठीक ठाक अच्छे कपड़े पहनते थे। लेकिन बहुत कीमती भी न पहनते थे। एक आदमी ने जुमा के दिन आपको एक मोटी लुंगी पहने हुए देखा उसकी कीमत पांच रूपये से ज्यादा न थी। आपने कभी पाइजामा नहीं पहना केवल जिस दिन शहीद हुए थे उस दिन पहना था।

हुलिया –

आप खूबसूरत थे, रंग सांवला, दरमियानी कद, नाक ऊंची, गाल भरे हुए चेहरे पर चेचक के हल्के हल्के दाग, दाढ़ी घनी और लम्बी सर के बाल घने और बड़े बड़े यहां तक कि कानों तक पहुंचते थे। दांत चमकदार और बराबर जिनको सोने के तार से बांधकर मजबूत किया गया था।

आपकी बीवियां –

(शेष पृष्ठ २६ पर)

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

डॉ० मुईद अशरफ नदवी

यरुशलम के बंटवारे पर राजी होता दिख रहा है इजराइल

हाल ही में पश्चिम ऐशिया मसले को सुलझाने के लिए अमेरिका में हुआ सम्मेलन रंग लाता दिख रहा है। इजराइली प्रधानमंत्री एहुद ओलमर्ट ने फलस्तीन समस्या के समाधान के प्रति गंभीरता दिखाते हुए पहली बार कहा कि देश में स्थायी शांति लाने के लिए यहूदियों, ईसाइयों और मुस्लिमों के पवित्र शहर यरुशलम का विभाजन करना जरूरी है। फलस्तीन और अरब देश इस शहर को नए फलस्तीनी राष्ट्र की राजधानी के तौर पर देखते हैं, जबकि इसी शहर में ईसा के जन्म होने की वजह से ईसाई और पवित्र दीवार की वजह से यहूदी भी इसे अपने लिए महत्वपूर्ण मानते हैं।

ओलमर्ट ने 'द यरुशलम पोस्ट' अखबार से बातचीत करते हुए कहा कि इजराइल के नेताओं को अपने देश को लोकतंत्र और यहूदियों के एक मात्र देश के रूप में बचाए रखना होगा। उन्होंने विरोधियों को फटकार लगाते हुए कहा कि जो भी देश इजराइल के दोस्त हैं, वे यरुशलम के विभाजन की सलाह कई बार दे चुके हैं। ये देश इजराइल के भविष्य को लेकर सोचते हैं और १९६७ के युद्ध के बाद हमारे देश की सीमाओं को बनाए रखने के लिए भी उन्होंने लगातार कोशिश की है। यरुशलम के बंटवारे पर सहमति जताते दिख रहे ओल्मर्ट ने हालांकि साफ कर दिया कि उनकी सरकार किसी भी हालत में शहर का वह हिस्सा मुस्लिमों को नहीं देगी, जहां मालेह एडुमिम यानी पवित्र दीवार है। उन्होंने कहा कि यह इजराइल और यरुशलम का अभिन्न हिस्सा है।

१९६७ की जंग में पश्चिमी किनारे, पूर्वी यरुशलम और गाजा पट्टी पर इजराइल ने कब्जा कर लिया था। इजराइली प्रधानमंत्री ने कहा कि अमेरिकी राष्ट्रपति जार्ज बुश ने भी २००४ में तत्कालीन प्रधानमंत्री एरियल शेरोन को लिखे पत्र में कहा था कि इजराइल को जंग के दौरान जीते गए हिस्सों को गंवाना नहीं पड़ेगा। उन्होंने इसे बड़ी उपलब्धि करार देते हुए कहा कि इजराइलियों को यह मान लेना चाहिए कि यह देश दो अलग–अलग धर्मावलंबियों के लिए ही बना है।

बेनजीर के चाचा ने जरदारी को राजनीति के नाकाबिल बताया

पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी की नेता बेनजीर भुट्टो की मौत के बाद अब उनकी विरासत को लेकर पारिवारिक कलह होने लगी है। सिंध में भुट्टो कबीले के वयोवृद्ध नेता और बेनजीर के चाचा मुमताज भुटटो तथा बेनजीर की भतीजी फातिमा के विरोधी ी तेवर नजर आने लगे हैं। ब्रिटिश अखबार 'गार्जियन' के मुताबिक मुमताज भुटटो बेनजीर के पुत्र बिलावल भुट्टो जरदारी को पार्टी की कमान सौंपे जाने के खिलाफ हैं। उन्होंने आसिफ अली जरदारी को भी राजनीति के लिए नाकाबिल बताया है।

मुम्ताज भुटटो सिंध के सामंती नेता हैं। ब्रिटेन और इटली में संपत्ति के अलावा पाकिस्तान में उनकी १५ हजार एकड़ जमीन है। वह १५ वर्ष पहले राजनीतिक मतभेद के कारण पीपीपी से अलग हो गए थे। और बेनजीर के कटटर विरोधी माने जाते थे। पाकिस्तान के इस प्रभावशाली ७४ वर्षीय नेता का कहना है कि जरदारी को राजनीति की कोई समझ नहीं है। उनका राजनीति में कदम रखना पीपीपी के लिए मुसीबत साबित होगा। बेनजीर से अलग होने के बाद मुमताज ने अपनी अलग पार्टी बनाई, लेकिन असफल होने के बाद अब वह कबीले के सामंती बुजुर्ग के नाते लोगों की समस्याओं को दूर करने का काम करते रहते हैं या विदेश में लंबे प्रवास पर निकल जाते हैं। वह बिलावल को पीपीपी का नेता बनाएं जाने से काफी क्षुब्ध हैं। बेनजीर के एक भाई मुर्तजा की कराची में १९९६ में गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। मुर्तजा की पत्नी गिनवा भुट्टो लेबनान में बेली डांसर रही है। अब मुर्तजा की २५ वर्षीय बेटी फातिमा भी पीपी में अहम भूमिका निभाने के लिए खम ठोंक रही है। वह भी बेनजीर की कटटर आलोचक रही है।

एलाने मिलकियत व अन्य विवरण

फारम–४ नियम–८

प्रकाशन का स्थान	–	मजलिसे सहाफत व नशरियात, नदवतुल उलमा, बादशाहबाग, लखनऊ
प्रकाशन अवधि	–	मासिक
सम्पादक	–	डा० हारून रशीद सिद्दीकी
राष्ट्रीयता	–	भारतीय
पता	–	अहाता दारुल उलूम नदवतुल उलमा, लखनऊ
मुद्रक एवं प्रकाशक	–	अतहर हुसैन
राष्ट्रीयता	–	भारतीय
पता	–	२१, अदनान पल्ली निकट हिरा पब्लिक स्कूल, रिंग रोड, दुबग्गा, डाक घर, काकोरी, लखनऊ
मालिक का नाम	–	मजलिसे सहाफत व नशरियात दारुल उलूम नदवतुल उलमा, लखनऊ

मैं, अतहर हसैन प्रमाणित करता हूं कि उपरोक्त विवरण मेरे विश्वास व जानकारी में सही हैं।